SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 11
April-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अप्रैल-2022
रु.5/-

ओंटिमिट्टा
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
2022 अप्रैल 10 से 18 तक

करुणानिधि रामा कौसल्यानंदन रामा!
परमपुरुष सीतापतिरामा!
शरधिबंधन! रामा! सवन रक्षक रामा!
गुरुतर रविवंश कोदंडरामा!

श्री रामानुज सहस्राब्दि समारोह के अवसर पर श्रीश्रीश्री त्रिदंडि चिन्नजीयर स्वामीजी 'श्री रामानुज समता मूर्ति' प्रतिमा का तेलंगाना, मुच्चिंतल् प्रांत में दि. 02-02-2022 से दि. 14-02-2022 तक विशेष पूजादि कार्यक्रमों का निर्वहण किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ने फोटो ग्यालरी व सूखे फूल प्रौद्योगिकी उत्पादों का प्रदर्शन किया और इस संदर्भ में ति.ति.दे. की ओर से ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी ने मुच्चिंतल् में स्थित 108 दिव्यदेशों में से तिरुमल दिव्यदेश के भगवान जी को पवित्र रेशमी वस्त्रों को समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी, अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी, न्यास-मंडली के सदस्यों एवं अन्य उन्नताधिकारीगण भाग लिये।

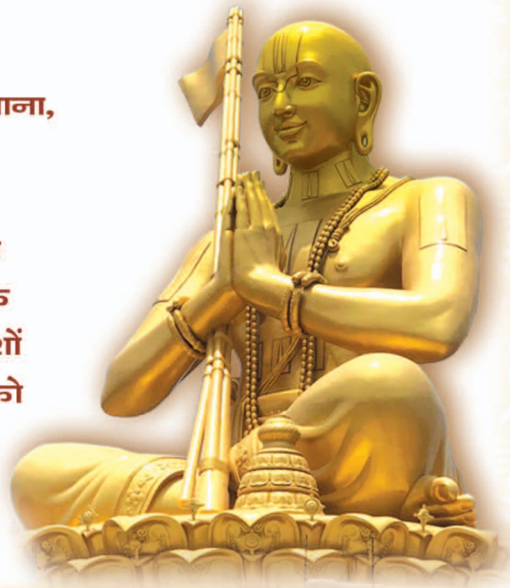

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३२)

हे कृष्ण! मैं तो विजय चाहता हूँ और न राज्य तथा सुखों को ही। हे गोविन्द! हमें ऐसे राज्य से क्या प्रयोजन है अथवा ऐसे भोगों से और जीवन से भी क्या लाभ है?

गीतार्थमेक पादं च श्लोक मध्यायमेव च।
स्मरं स्त्यक्त्वा जनो देहं प्रयाति परमं पदम्।।

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

जो मनुष्य गीता के एक अध्याय या गीता के एक श्लोक या एक पद के अर्थ का स्मरण करते हुए देहत्याग करेगा वह परमपद प्राप्त करेगा।

तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
2022 मार्च 30 से अप्रैल 07 तक

30-03-2022
बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

31-03-2022
गुरुवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

01-04-2022
शुक्रवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

02-04-2022
शनिवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

03-04-2022
रविवार
दिन - पालकी में आरूढ़
मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

04-04-2022
सोमवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

05-04-2022
मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

06-04-2022
बुधवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

07-04-2022
गुरुवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५२ अप्रैल-२०२२ अंक-११

विषयसूची

मत्स्यावतार में भगवान नारायण	डॉ.जी.मोहन नायुडु	07
श्रीरामचंद्रजी के मंदिरों का वैभव	डॉ.गाजुला शेक षावली	10
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	14
श्रीराम नाम की महिमा	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	16
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	20
स्वस्थ विश्व के लिए 'पंचगव्य'	डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी	23
सकलगुणाभिराम	डॉ.एच.एन.गौरी राव	31
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	36
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	38
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	40
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	42
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	44
गुड और हमारा आरोग्य	डॉ.सुमा जोषी	46
अप्रैल महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	48
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	49
नीतिकथा - कर्म का फल	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
क्विज	एन.प्रत्यूषा	51
चित्रकथा - श्रीरामरक्षा! सर्वजगद्रक्षा!!	डॉ.एम.रजनी	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - श्री सीता समेता कोदंडरामस्वामी, ओंटिमिट्टा।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री वसंतलक्ष्मी।

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

श्रीराम जय राम! जय जय राम!!

तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि' का त्योहार हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र माह के प्रथम दिन मनाया जाता है। हमारे सनातन धर्म के अनुसार प्रत्येक नूतन वर्ष का अलग-अलग नाम है, ऐसे साठ नाम है। अतः इस साल का नाम 'शुभकृत्' है। उगादि के दिन हरेक हिन्दू धर्मावलंबी 'उगादि पच्चडी' नामक छः प्रकार के व्यंजनों से भगवान के लिए नैवेद्य के रूप में अर्पित कर तदनंतर प्रसाद के रूप में स्वीकारते है और इसी दिन 'पंचांग श्रवण' का सुनना एक संप्रदाय है। नक्षत्र, काल गमण, द्वादश राशियों का प्रभाव... आदि के बारे में प्रवचनकर्ता के द्वारा सुनकर आगामी भविष्य को दृष्टि में रखकर व्यवहार कर सकते हैं। उगादि को 'गुडी पाड़वा' नाम से भी जानते हैं। जिसका अर्थ है 'विजय पताका' और इसी दिन से 'वसंत नवरात्रियाँ' भी आरंभ हो जाती है।

वसंत नवरात्रियों का अंतिम दिन 'श्रीरामनवमी' महोत्सव को मनाते है। यह भी एक महत्वपूर्ण पर्व है। इसी दिन सभी श्रीवैष्णव मंदिरों में 'श्रीसीताराम कल्याणोत्सव' को अत्यंत धूम-धाम से मनाया जाता है। इस दिन 'पानकं-वडपप्पु' को नैवेद्य के रूप में समर्पित करते है। साक्षात् श्री महाविष्णु ही इस धरती पर मानव रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जैसा अवतार धारण किये। उन्होंने अपने जीवन काल में कई क्लेशों को सहते हुए भी मर्यादित जीवन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में अपना जीवन को बिताया है। श्रीराम जी का जन्म पर्व के कारण ही इस तिथि को 'श्रीरामनवमी' कहा जाता है और लोककल्याणार्थ सभी मंदिरों में वैभवोपेत ढंग से कल्याणोत्सव करना एक संप्रदाय बन गया है।

भगवान श्रीराम को सकलगुणाभिराम, रामो विग्रहवान् धर्मः, एक पत्नी व्रत (दूसरा विवाह करने का अधिकार होने पर भी न किया); राम मंत्र तारक मंत्र (राम नाम से सेतु निर्माण); मृदु-मधुर भाषी; पितृ वाक्य पालक (14 साल अरण्य वास); सकल जीवराशियों पर अपना दयार्द्र भावना प्रकट करते है (सेतु निर्माण पर गिलहरी की सहाय, जटायु को दहन कार्य करना); राजनीति पालन (श्रीराम राज्य); भक्त वत्सल (हनुमान, सबरी); मैत्रि बंधन (गुह आथित्य को स्वीकार किया, विभीषण); स्पर्श से शाप ग्रस्थ अहल्या पत्थर से अपने निजी रूप का धारण की। माँ कौशल्या के साथ-साथ सौतेली माताएँ से भी आदर पूर्वक व्यवहार करते थे और भाईयों लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न से भी समान प्रेम करते थे। अरण्यवास के समय में प्रभु श्रीराम ने ऋषि-मुनियों ही नहीं बल्की जांबवंत, अंगद, हनुमान, सुग्रीव और उनके वानर सेना के साथ उनका अटूट स्नेह था।

प्रभु श्रीराम एक आदर्शवान जीवन में, राग-द्वेष-क्रोध को स्थान न देकर तीक्षण विचार से विषय को समझकर सही निर्णय लेकर, सभी को गौरवान्वित कर, आदर्श राज्य पालन करके, उच्च-नीच, जाति-पांति न देखकर, प्रेम से व्यवहार करके कठिनाई समयों पर भी संयमन से व्यवहार कर एक आदर्श पुरुष बन गये। इस प्रकार हम श्रीराम को एक आदर्श पुरुष के रूप में हम ले सकते हैं।

''रामेण सदृशो देवो न भूतो न भविष्यति!!''

मत्स्यावतार में भगवान नारायण

डॉ.जी.मोहन नायुडु
मोबाइल - 9441480473

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष तृतीया को भगवान विष्णु का मत्स्यावतार हुआ। अतः चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मत्स्य जयन्ती मनायी जाती है। इस अवतार की कथा मत्स्य पुराण में मिलती है। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु ने सृष्टि को प्रलय से बचाने के लिए मत्स्यावतार लिया। मत्स्यावतार भगवान विष्णु के दस अवतारों में प्रथम अवतार है। मत्स्य अर्थात् मछली। कहते हैं कि इस अवतार में उन्होंने वैवस्वत मनु को एक विशाल नाव बनाकर उसमें सभी पशु, पक्षी, नर-नारी, ऋषि-मुनियों को रखने का आदेश दिया। ताकि जल प्रलय के समय अधिकतर प्राणियाँ बचे रहें। हिंदू पुराणों के अनुसार एक समय ऐसा आया तब धरती पर भयानक वर्षा हुई। जिसके परिणाम स्वरूप समस्त पृथ्वी जल में डूब गयी थी, परंतु सिर्फ कैलाश पर्वत की चोटी और ओंकारेश्वर में स्थित मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम ही नहीं डूबा।

मंत्र : *ॐ मत्स्याय मनुकल्पाय नमः*

मत्स्य अवतार की कथा :

एक बार ब्रह्म की असावधानी के कारण एक राक्षस हयग्रीव ने वेदों को चुरा लिया। वेदों को चुरा लिए जाने के कारण ज्ञान लुप्त हो गया। चारों ओर अज्ञान रूपी अंधकार फैल गया तथा पाप और अधर्म चरम सीमा पर पहुँच गए। तब भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए मत्स्यावतार लेकर हयग्रीव का वध किया और वेदों की रक्षा की। विष्णु ने मत्स्य का रूप किस प्रकार धारण किया इसकी कथा बहुत रोचक है -

कल्पांत के पूर्व एक पुण्यात्मा द्रविड देश के राजा सत्यव्रत तप कर रहा थे। वे बडे उदार भी थे। एक दिन सूर्योदय के समय राजा सत्यव्रत कृतमाला नदी में स्नान कर रहे थे। स्नान करने के बाद उसने जब तर्पण के लिए अंजलि में जल लिया, तो अंजलि में जल के साथ एक छोटी-सी मछली भी आ गयी। राजा सत्यव्रत ने उस मछली को नदी के जल में छोड दिया। तब मछली बोली- ''हे राजन! जल के बड़े-बड़े जीव छोटे-छोटे जीवों को मारकर खा जाते हैं। अवश्य कोई बडा जीव मुझे भी मारकर

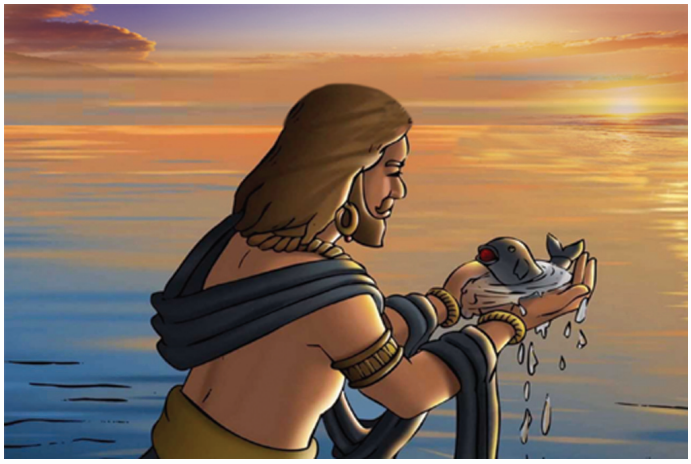

खा जाएगा। आप कृपा करके मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए।'' इन बातों को सुनकर सत्यव्रत के हृदय में दया उत्पन्न हो गयी। राजा ने मछली को जल के साथ अपने कमंडल में डाल लिया। उसके बाद एक विस्मय की घटना घटी। एक ही रात में मछली का शरीर इतना बढ गया कि कमंडल उसके रहने के लिए छोटा हो गया। दूसरे दिन मछली सत्यव्रत से बोली कि ''राजन! मेरे रहने के लिए कोई दूसरा स्थान ढूंढिए, क्योंकि मेरा शरीर बढ गया है। मुझे घूमने-फिरने में बडा कष्ट होता है।'' सत्यव्रत ने मछली को कमंडल से निकालकर पानी से भरे हुए मटके में डाल दिया। यहाँ भी मछली का शरीर रातभर में ही इतना बढ गया कि मटका भी उसके रहने के लिए बहुत छोटा हो गया। मछली पुनः सत्यव्रत से बोली- ''राजन! मेरे रहने के लिए अन्य जगह पर प्रबन्ध कीजिए, क्योंकि मटका भी मेरे रहने के लिए छोटा पड रहा है।'' तब सत्यव्रत ने मछली को निकालकर एक सरोवर में डाल दिया, लेकिन सरोवर भी मछली के लिए छोटा पड गया। इसके पश्चात सत्यव्रत ने मछली को नदी में और फिर उसके बाद समुद्र में डाल दिया। समुद्र में भी मछली का शरीर इतना बढ गया कि मछली के रहने के लिए समुद्र भी छोटा पड गया। इसलिए मछली पुनः सत्यव्रत से बोली कि ''हे राजन! यह समुद्र भी मेरे रहने के लिए उपयुक्त नहीं है। इसलिए मेरे रहने की व्यवस्था अन्य जगह पर कीजिए।''

यह सुनकर राजा सत्यव्रत चकित हो गये और उसने अब तक ऐसी मछली कभी नहीं देखी थी। उसने कहा था कि ''मेरी बुद्धि को विस्मय के सागर में डुबोनेवाले आप कौन हैं? आपका शरीर जिस गति से दिन प्रतिदिन बढता ही जा रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप अवश्य परमात्मा है। यदि यह सत्य है, तो कृपा करके बताइए कि आपने मत्स्य का रूप क्यों धारण किया है?'' इसका उत्तर यह है कि वह सचमुच भगवान विष्णु ही है।

भगवान विष्णु का आदेश :

मत्स्यावतारी विष्णु ने आदेश दिया कि ''हे राजन! हयग्रीव नामक राक्षस ने वेदों को चुरा लिया है। इसलिए जगत में चारों ओर अज्ञान और अधर्म का अंधकार फैला हुआ है। मैंने हयग्रीव को मारने के लिए ही मत्स्य का रूप धारण किया। आज से सातवें दिन सारी पृथ्वी पानी में डूब जाएगी। जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई देगा। आपके पास एक नाव पहुँचेगी। आप सभी अनाजों और औषधियों के बीजों को लेकर सप्तर्षियों के साथ नाव पर बैठ जायेंगे। मैं उसी समय आपको पुनःदर्शन दूंगा और आपको आत्म तत्व का ज्ञान प्रदान करूंगा।''

सत्यव्रत उसी दिन से विष्णु का स्मरण करते हुए जल प्रलय की प्रतीक्षा करने लगे। सातवें दिन प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया। समुद्र भी उमडकर अपनी सीमाओं से बाहर बहने लगा। भयानक वर्षा होने लगी। थोडी ही देर में संपूर्ण पृथ्वी जल में समा गयी। उसी समय अचानक एक नाव दिखाई पडी। राजा सत्यव्रत सप्तर्षियों के साथ

उस नाव पर बैठ गये। उन्होंने नाव के ऊपर संपूर्ण अनाजों और औषधियों के बीज भी भर लिए।

आत्मज्ञान की प्राप्ति :

नाव प्रलय के सागर में तैरने लगी। प्रलय के समय उस समुद्र में नाव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। अचानक मत्स्य रूपी भगवान विष्णु प्रलय के सागर में प्रत्यक्ष हुए। राजा सत्यव्रत और सप्तर्षि गण मत्स्य रूपी विष्णु से प्रार्थना करने लगे कि ''हे प्रभु! आप ही इस सृष्टि के आदि, पालक और रक्षक हैं। आप कृपा करके हमें अपनी शरण में लीजिए, हमारी रक्षा कीजिए।'' सत्यव्रत और सप्तर्षियों की प्रार्थना सुनकर मत्स्य रूपी भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न हो गये। भगवान ने सत्यव्रत को आत्मज्ञान प्रदान किया और बताया कि ''सभी प्राणियों में मैं निवास करता हूँ। न कोई ऊंच है, न नीच। समस्त प्राणी समान है। यह जगत नश्वर है और इस नश्वर जगत में मेरे अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जो प्राणी मुझे सबमें देखता हुआ जीवन यापन करता है, वह अंत में मेरे अंदर ही समाहित हो जाता है।''

हयग्रीव का वध :

मत्स्य रूपी भगवान से आत्मज्ञान पाकर सत्यव्रत का जन्म धन्य हो गया। वे जीते ही जीवन मुक्त हो गये। प्रलय का प्रकोप शांत होने पर मत्स्य रूपी भगवान ने हयग्रीव को मारकर उस राक्षस से वेद छीन लिए और ब्रह्म को पुनः वेद दे दिये। इस तरह भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप धारण करके वेदों का न केवल उद्धार किया बल्कि संसार के समस्त प्राणियों का भी कल्याण किया। राजा सत्यव्रत ज्ञान-विज्ञान से युक्त होकर वैवस्वत मनु कहलाए। नौका में जो बच गये थे उन्हीं से सृष्टि का अस्तित्व बना रहा। इस प्रकार विष्णु भगवान समय-समय पर विविध रूपों में अवतरित होकर सज्जन और साधुओं का कल्याण करते हैं। अपने अवतारी धर्म को निभाते हैं।

श्रीरामचंद्रजी के मंदिरों का वैभव

-डॉ.गाजुला शेक षावली, मोबाइल - 9885083477.

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।

भाव - इस श्लोक में श्री वेदव्यास जी ने, स्वयं कहा है कि - यह श्लोक महिमामयी मन्त्र के समान है।

इसी श्लोक को वाल्मीकि महर्षि जी ने विष्णु सहस्त्र नाम के संदर्भ में बताया है। जो मनुष्य भक्ति-श्रद्धा से श्रीराम में लीन होकर, राम नाम का स्मरण करते हैं। श्रीराम, सीता समेत उनके हृदय में शास्वत रूप से रह जाते हैं। यह राम नाम हजारों नामों का समान है।

अवतरण - शिष्ट जनों के संरक्षक, भूत, वर्तमान, भविष्य काल के आदर्श पुरुष, नेता, भाई, पुत्र, मित्र, पति के रूप में न भूतो न भविष्यती है श्रीरामचंद्रजी।

पितृ आज्ञा पालक दशरथ सुपुत्र श्रीरामचंद्र जी का नाम स्मरण, श्रवण, कीर्तन, स्पर्श, वंदन मात्र से मोक्ष प्राप्त होता है। ऐसे पुण्य प्रदाता श्रीरामचंद्र जी का वैभव-प्रभाव वर्णनातीत है।

श्रीराम मंदिरों का वैभव

1) तिरुपति - श्री कोदंडरामालय का इतिहास, वैशिष्ट्य और महत्व :

सीतायाम दक्षिणे पार्श्व लक्ष्मणस्याचा पार्श्वतः,
तन्मध्ये राघवं वन्दे दृजनुर्भान धरम हरीम।।

स्थल पुराण के अनुसार - तिरुपति शहर के बीच में, सुविशाल प्रांगण में श्री कोदंडरामस्वामी का महिमामयी

मंदिर सुप्रसिद्ध है। त्रेतायुग में श्री सीता, राम, लक्ष्मण ने वनवास के समय इस प्रदेश में संचार किया है। इस विषय के स्मरण के लिए जांबवंत ने इस कोदंडराम मंदिर में श्री सीता, राम, लक्ष्मण के अर्चामूर्तियों की प्रतिष्ठा की है, ऐसी मान्यता है। इस के साथ-साथ नवग्रह की प्रतिमाएँ, बहुत पुराना बोधि वृक्ष, विशाल प्रांगन, विजयनगर राजाओं की शिल्प कला का वैभव इत्यादि इस मंदिर का वैभव है।

द्वापरयुग में - जनमेजय महाराज ने इस मंदिर का जीर्णोद्धारण किया है, ऐसी सूचना सवाल - जवाब पट्टी में स्पष्ट किया गया है। आज भी इस पट्टी को हम देख और पढ़ सकते हैं। लोक कथा और शिला शासनों के आधार पर 14वीं सदी के संवत 1402 में, विजयनगर साम्राज्य के राजा नरसिंहरायलु जी ने, श्रीरामचंद्र पुष्करिणी में छिपाए गए श्री सीता, राम, लक्ष्मण की मूर्तियों को वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार लाकर इसी मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की है। तिरुमल बालाजी मंदिर की तरह इस मंदिर में भी पंचबेर मूलवर्लु, कौतुक आदि मूर्तियाँ सदा उत्सव, नित्य पूजार्चन प्राप्त करते हैं। इस मंदिर के सामने श्री आंजनेय / हनुमान का भी मंदिर है। यहाँ नित्य पूजा अर्चन होते हैं।

हनुमान का जन्म स्थान - पुराण, इतिहास और साहित्य के अनुसार हनुमान का जन्म स्थान तिरुमल, अंजनाद्री पर्वत पर है। श्रीराम के वनवास के समय श्रीराम की मूलाकात हनुमान से हुई है। हनुमान ने श्रीरामचंद्र जी को अपनी वानर सेना से सहायता करने का वचन यहीं पर दिया है।

उत्सव - तिरुमल तिरुपति देवस्थान की अध्यक्षता में श्रीरामनवमी के ब्रह्मोत्सव हर साल बड़े धूम-धाम से इस मंदिर में मनाये जाते हैं। इसके साथ-साथ रथसप्तमी, वैकुंठ एकादशी, पवित्रोत्सव, प्लवोत्सव इत्यादि उत्सव भी मनाये जाते हैं।

महिमा / महत्व - हर दिन श्रीराम भक्त प्रातःकाल - संध्या समय स्वामी के दर्शन कर, सुख-शांति प्राप्त कर स्वामी के कृपा पात्र होते हैं।

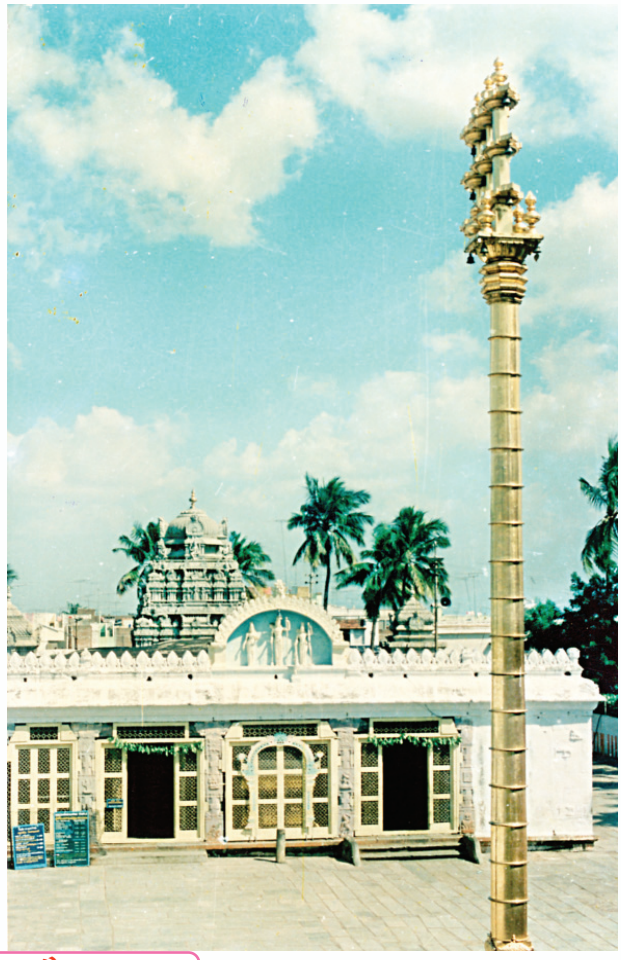

2) ओंटिमिट्टा - श्री कोदंडरामालय का इतिहास, वैशिष्ट्य और महत्व - पुराणों के अनुसार श्रीराम अपने पिताजी आज्ञा का पालन और अपनी माँ कैकेयी की कामना को पूरी करने हेतु अपने पट्टाभिषेक को त्याग कर 14 साल का वनवास करते हुए, दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश के, कडपा जिले के राजंपेटा मंडल के ओंटिमिट्टा गाँव के दंडकारन्य में मृकुंड नामक मुनि के आश्रम में 'एक श्रृंग पर्वत' पर कुछ दिन निवास किया था।

इतिहास के अनुसार 13वीं सदी में उदयगिरि के राजा गंपरायुडु के अधीन में दंडकारण्य था। एक बार इस दंडकारण्य से रामेश्वरम जाते हुए उन्होंने यहाँ रुक कर आराम किया है। राजा ने इस स्थल पुराण के महत्व और श्रीरामचंद्र जी के राम तीर्थ की महिमा को जानकर, तुरंत अपने भाई बुक्करायलु की अध्यक्षता में इस प्रांत के अधिकारी ओंटडु और मिट्टडु नामक भाईयों को बुलाकर आदेश दिया कि - तुरंत श्री कोदंडरामालय और तालाब का निर्माण करवाया जाय। राजा गंपरायुडु रामेश्वरम की तीर्थयात्रा से लौटते समय गोदावरी से चार मूर्तियाँ ले आये। एक ही शिला पर श्री सीता, राम, लक्ष्मण की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की। इसलिए इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं।

राम की दूसरी मूर्ति को गंडीकोटा/किले के राम मंदिर में, तीसरी राम की मूर्ति को गुत्ति किले के रामालय में, चौथी अनंतपुर जिले के पामिडी गाँव के राम मंदिर में प्रतिष्ठा की है। इस विषय को प्रेंच के इतिहासकार टवरलियन ने अपनी पुस्तक में इस ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामालय के वैभव के साथ अद्भुत रूप से वर्णन किया है।

श्रीरामनवमी का उत्सव - आंध्रप्रदेश, तेलंगाना राज्य से अलग होने के बाद, तिरुमल तिरुपति देवस्थान की अध्यक्षता में श्रीरामनवमी के ब्रह्मोत्सव हरसाल बड़े धूम-धाम से इस मंदिर में मनाये जाते हैं। इसके साथ-साथ रथसप्तमी, वैकुंठ एकादशी, श्री सीताराम कल्याणोत्सव, पोतना जयंती इत्यादि उत्सव यहाँ पर मनाये जाते हैं।

महिमा - यहाँ के लोगों का विश्वास है कि- श्रीरामतीर्थ में स्नान कर, स्वामी का दर्शन करने पर, सारी बीमारियाँ, समस्याएँ, समस्त कष्ट दूर होकर मन को सुख-शांति प्राप्त होती है। इसलिए साल भर हजारों लोग इस मंदिर के दर्शन करते रहते हैं।

3) वायल्पाडु - श्री पट्टाभिराम स्वामी मंदिर -

''रामो विग्रहवान् धर्मः''

स्थल पुराण के अनुसार यहाँ पर बिल/बोया जाती के वाल्मिकि महर्षि ने तपस्या की थी। इस कारण से इस स्थान को वायल्पाडु / बोया / बिल्पाडु कहा जाता है।

दूसरा कथन यह है कि इस गाँव के एक बिल में श्री सीता, राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की पट्टाभिषेक के समय की

मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस कारण से भी इस गाँव को वायल्पाडु / बिल्पाडु कहते हैं। इतिहास के अनुसार 14वीं सदी में सिद्धवटम के राजा साल्व नरसिंहराजु ने इस मंदिर का निर्माण किया है, ऐसी लोक कथा प्रचलित है। श्री अन्नमाचार्य जी और उनके पोते ने इस मंदिर का दर्शन कर इस मंदिर के ब्रह्मोत्सवों में भाग लेकर अनेक संकीर्तनों की रचना की है। सन् 1820 ई. में, मद्रास के गवर्नर जनरल हार्ड हार्टी ने इस मंदिर के दर्शन के बाद अपनी पत्नी बीमार से मुक्त होने पर, अत्यंत भक्ति-श्रद्धा से मंदिर के विकास में सहयोग प्रदान किया है।

वायल्पाडु - श्री पट्टाभिरामस्वामी मंदिर का वैशिष्ट्य - इस मंदिर के ऊपर सुदर्शन चक्र का विमान है। मंदिर के गर्भालय में श्रीराम, सीता समेत लक्ष्मण की सुंदर मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

उत्सव - तिरुमल तिरुपति देवस्थान की अध्यक्षता में श्रीरामनवमी को श्री सीताराम कल्याण के ब्रह्मोत्सव हरसाल बड़े धूम-धाम से इस मंदिर में मनाये जाते हैं। इस ब्रह्मोत्सव के साथ-साथ, हरवर्ष श्रावण मास में शुक्ल सप्तमी को श्रीरामपट्टाभिषेक भी मनाया जाता है।

महिमा / महत्व - जो मनुष्य अपने कष्टों से, समस्याओं से, बीमारियों से मुक्त होने के लिए तथा अपने पुत्र-पुत्रिकाओं के विवाह की मनौतियाँ

मांगते है, वे अवश्य श्रीराम की कृपा से पूर्ण होती हैं, ऐसा भक्तों का विश्वास है।

4) चंद्रगिरि - श्री कोदंडरामालय का इतिहास, वैशिष्ट्य और महत्व -

13-14वीं सदी में, चन्द्रगिरि के राजा श्रीकृष्णदेवराय ने चंद्रगिरि किले के नीचे ही इस सुविशाल, अद्भुत शिल्प कला युक्त श्री कोदंडरामालय का निर्माण किया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने सन् 2015 सितंबर 23वीं तारीख को इस का जीर्णोद्धार करके इसे अत्यंत वैभव पूर्ण से अपनाया है।

महत्व / महिमाएँ - तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर के मंदिर की तरह यहाँ भी वैकुंठ एकादशी के दिन वैकुंठ द्वार के दर्शन होते हैं।

एकादशी के दिन वैकुंठ द्वार से श्रीराम जी के दर्शन किए जाते हैं। लोगों का विश्वास है कि- इस मंदिर में श्रीराम जी के दर्शन कर सीता कल्याण का कंकण बाँध लेने पर अविवाहितों का तुरंत विवाह होता है। युवतियों को श्रीराम जैसा सकलगुणाभिराम पति के रूप में प्राप्त होता है।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

117

श्रीमते रामानुजाय नमः

एक रोज किसी पर्व काल के दिन श्री नारदजी को एकान्त में उदास बठे देखकर कृपा-सागर भगवान पूछे कि आज आप उदास तथा भयभीत के समान क्यों बैठे हुए हैं? प्रभु का श्रीमुख वचन सुनते ही अति प्रेम से साष्टांग दण्डवत करके श्री नारदजी बोले कि :-

कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु केशव।
शरीरे च गतौ चापि वर्तते मे महद्भयम्।।

हे कृपानाथ! इन पुण्य कालों में पूर्व उत्तर आदि दिशाओं में उपायान्तर प्रवृत्ति के योग्य इस द्विज शरीर में शरणागति के अतिरिक्त बाकी उपायान्तरों में हमें तो बहुत भय रहता है। हे शरणागत वत्सल! अनादि काल से इस संसार चक्र में भ्रमण करता-करता किसी प्रकार गुरुकृपा से स्वरूपानुरूप असली रास्ता जो आपकी शरणागति है सो मिल पाई है। शरणागति के सिवा इस जीव के उद्धार के लिये कोई सच्चा दूसरा सुगम मार्ग नहीं है। और वे पर्व वगैरह के दिन हैं सो प्रायः जीवों को उपायान्तर में प्रवृत्त कराने वाले हैं और पूर्व दिशा उत्तर दिशा मन से उपायान्तर में प्रवृत्त कराने वाली हैं। इसलिये परवश उपायान्तर को याद कराने वाले निमित्त तिथियों के संक्रान्ति, ग्रहण आदि पर्वों को देख सुनकर बहुत भय हुआ करता है। इसका कारण यह है कि इस चेतन को भगवान की निर्हेतुक कृपा से हटाकर प्रायः करके उपायान्तर में प्रवृत्त करने वाले ये सब पर्व हुआ करते हैं। श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! नारदजी के मुख से इस प्रकार शरणागति निष्ठा का वचन सुनकर भगवान बड़े प्रसन्न भये और अन्तर्ध्यान होते भये। हे मुमुक्षु महात्माओं! यह उपायान्तर शरणागति निष्ठा का कट्टर शत्रु है। इससे शरणागतों को चाहिये कि इससे बहुत सम्हल कर रहें। श्राद्ध तर्पण भी उपासक और प्रपन्न दोनों हीं करते हैं परन्तु दोनों की रीति भिन्न-भिन्न है। उपासक लोभ तो इस रीति से करते हैं कि जहाँ भी हमारे पितर लोग होंगे उनको इस श्राद्ध तर्पण के द्वारा सहायता मिलेगी। परन्तु शरणागत भगवान की आज्ञा कैंकर्य मानकर ही करते हैं। शरणागतों के पितरों के बाबत तो शास्त्रों की ऐसी आज्ञा है :-

अण्वयादपि चैकस्य सम्यगन्यस्यात्मनो हरौ।
सर्व एव प्रमुष्येरन् नराः पूर्वेऽपरे तथा।

उपायान्तर त्यागपूर्वक कुल में एक भी यदि कोई श्री भगवान के शरण हो जाता है तो उसके सम्बन्ध से अनेक पीढ़ी परमपद चली जाती है। शास्त्र के इस नियम के अनुसार वैष्णवों के पितर लोग तो शरणागत होते ही मात्र भगवान के लोक को चले जाते हैं। फिर उनको किसी की मदद लेने की जरूरत ही नहीं रह जाती क्योंकि उनके बाबत शास्त्रों का यह कहना है कि :-

वैष्णवानां तुपितरी नवै निरयगामिनः।
पितृ लोकेन ते सन्ति न सन्ति यममन्दिरे।।
पार्श्व देशे बिराजन्ते श्रीहरेः परमेपदे।

इसका भाव यह भया कि शरणागत वैष्णवों के पितर पितृलोक में नहीं रहते हैं न यमपुरी में हीं। किन्तु शरणागतवत्सल भगवान के अनुग्रह से परमपद में भगवान के समीपवर्त्ती होकर रहते हैं। शास्त्रों के आदेशानुसार वैष्णवों के पितरों को किसी से मदद लेने की जरूरत नहीं है। तो भी भगवान की आज्ञा कैंकर्य मानकर श्राद्ध तर्पणादि अवश्य करना चाहिये। सन्ध्यातर्पणादि में जो कहीं-कहीं देवतान्तरों का नाम आया है जैसे :-

सूर्यश्च मामन्युश्च।

इन मंत्रों के प्रयोग करने से शरणागत देवतान्तरी नहीं कहे जा सकते हैं। क्योंकि शरणागति शास्त्र के पारंगत श्री बरदाचार्य जी महाराज ''प्रपन्न पारिजात'' ग्रन्थ में लिखते हैं कि :-

देवतान्तर संभक्तिं नित्यकर्म बिधिं बिना।

याने शरणागतों को चाहिए कि अपना इष्टदेव जो भगवान श्रीमन्नारायण हैं उनको छोड़कर बाकी देवों की भक्ति भूलकर भी न करे और नित्य कर्म में जो देवतान्तरों का नाम आता है सो शरणागतों की शरणागति का भंजक नहीं है। जिस प्रकार एकादशी आदि व्रतों में अन्न लेना मना है परन्तु मूंग के पदार्थ लेने से व्रत भंग नहीं होता है यह ''स्मृतिरन्ताकर'' नामक धर्म शास्त्र में लिखा है। शरणागतों को इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि संध्या के समय जो मानसिक ध्यान और पूजन किया जाता है वह अपने इष्ट देव श्री लक्ष्मी पति भगवान का ही करना चाहिए। बड़ों की आज्ञानुसार तो सन्ध्या तर्पणादिक में देवतान्तर का प्रसंग शरणागति तथा अनन्यता का भंजक नहीं है। परन्तु तो भी जिस शरणागत का चित्त नहीं मानता हो वह, ऐसा वह समझ ले कि परमात्मा का अनन्त नाम है। इस नित्य कर्म विधि में जो देवतान्तरों के नाम आये हैं। ये उनके न होकर हमारे उसी प्यारे परमात्मा के हैं इस तरह से मन को समझाकर नित्य कर्म कर लिया करे। जिसको इस तरह से करने पर भी शान्ति न मिले, वह देवतान्तरों के नाम के जगह अपने प्यारे परमात्मा का नाम बोल लिया करे। कारण कि शास्त्रों का यह भी कहना है।

अत्यन्त भक्तियुक्तानां नैव शास्त्रं न च क्रमः।

दुनियाँ में जितने कर्मकाण्ड हैं वे सब अपने-अपने कर्म के पूर्ण रूप से परिसमाप्ति के लिए श्री भगवान के श्री नामों का ही स्मरण किया करते हैं। जैसे कि :-

यस्य स्मृत्या च नाम्ना च यज्ञ दान क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो बन्दे तमच्युतम्।।

इसका भाव यह भया कि जिसके स्मरण से तथा नाम लेने मात्र से यज्ञ दान क्रियादिकों की न्यूनता मिटकर सविध परिपूर्णता हो जाती है ऐसे जो अच्युत भगवान हैं उनको प्रणाम करता हूँ। और भी कहा है कि :-

मन्त्र तस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हबस्तुतः

सर्वं करोति निश्छिद्रं नाम संकीर्तनं तव

इसका यह भाव भया कि मन्त्रादि जपने में ह्रस्व, दीर्घ, लुप्तादि उच्चारण में टाइम - कुटाइम में, योग्य सामग्री जुटाने में जो भी कुछ त्रुटि हो जाती है सो भगवान के नाम कीर्त्तन से सब मिट जाती है। सारांश यह हुआ कि जब परमात्मा के स्मरण मात्र से कर्मकाण्डों के सभी दोष दूर होते हैं तो मन नहीं मानने पर देवतान्तर के स्थान में परमात्मा का नाम बोल कर नित्य कर्म जो सन्ध्या तर्पणादिक हैं उसको कर लेने से हजारों विधि से बढ़कर क्यों नहीं कहा जा सकता है। बड़ों का वचन है कि :-

तेन तप्तं हुतं दत्त मेवा खिलं तेन सर्वं कृतं कर्म जालम्।

येन श्रीरामनामामृतं पानकृतमनिश मनवद्य अवलोक्य कालम्।।

क्रमशः

श्रीराम नाम की महिमा

डॉ सी आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

'राम' शद्व 'रा' (रकार) 'म' (मकार) से मिलकर बना है, इसमें से 'रा' शब्द अग्नि का स्वरूप है यह हमारे दुष्कर्मों का दाह करता है, वही 'म' जल तत्त्व का प्रतीक है, जल आत्मा की जीवात्मा पर विजय का कारक है इस प्रकार पूरे तारक मंत्र 'श्रीराम जय राम जय जय राम' का अर्थ है शक्ति से परमात्मा पर विजय। 'राम' का उच्चारण पापों को भस्म करता है। अध्यात्म विज्ञान में माना गया है कि जब व्यक्ति 'रा' शब्द का उच्चारण करता है तो इसके साथ-साथ उसके आंतरिक पाप बाहर आ जाने के कारण अंन्तःकरण निष्पाप हो जाता है। राम नाम अथवा मंत्र जपते रहने से मन और मस्तिष्क पवित्र होते हैं और व्यक्ति अपने पवित्र मन में परब्रह्म परमेश्वर के अस्तित्व को अनुभव करने लगता है। घोर कलिकाल में राम नाम का उच्चारण मात्र दैहिक, दैविक और भौतिक सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति दिलाता है। राम नाम चिंता को चकनाचूर कर देता है। तुलसीदास कहा कि जो जन दुःख और घोर संकट आने पर भी राम नाम को जपते है, उनके भयंकर संकट जप के प्रभाव से मिट जाते हैं, और वो मनुष्य सुखी हो जाता है।

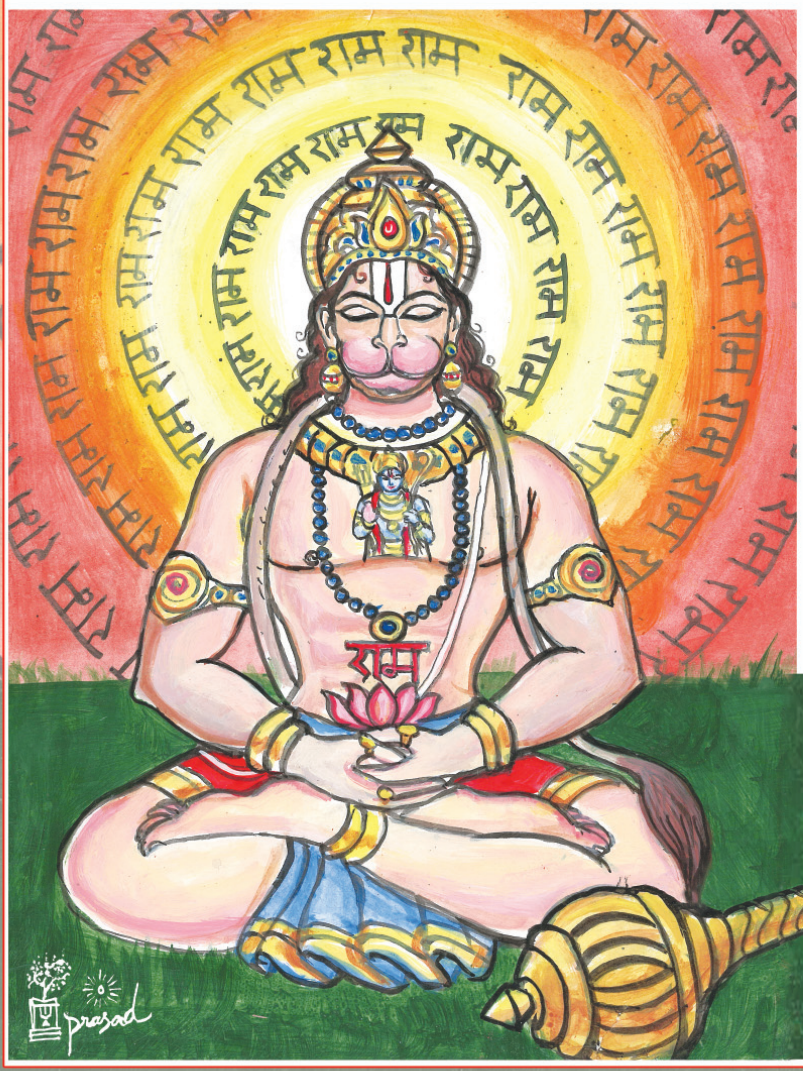

राम नाम जपने से सभी प्रकार के दुःख दर्द और कठिनाइयाँ श्रीराम की कृपा से अपने आप दूर हो जाया करते हैं। जैसे तेज हवा चलने से बादल भाग जाते हैं, वैसे ही राम नाम का जप घबराहट को दूर कर देता है। जब इंसान पर संकट भयंकर प्रकार के दुःख तथा क्लेश हो तब उसे घबराना नहीं चाहिए। उस समय तुरंत राम नाम जपना चाहिए, क्योंकि राम नाम सबका पालक है। प्रभु श्रीराम सभी प्रकार के सुखों को देने वाले स्वामी हैं। जो भी जीव श्रीराम रूपी सरोवर अर्थात् सत्संगति में विचरता है, उसे श्रीराम के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है।

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।

नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति!!

जगत्त्रैत्रेकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्!

यः कन्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः!!

एकैकमक्षरं प्रंसां महापातकनाशनम्।

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्!!

वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम्!!

भगवान राम का नाम स्वयं एक महामंत्र है। इसके जप से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति सहज हो जाती है। अन्य नामों की अपेक्षा राम नाम हजार नामों के समान है। राम मंत्र को तारक मंत्र भी कहा जाता है।

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने!!

चहु ओर सफलता के लिए -

ॐ राम ॐ राम ॐ राम ह्रीं राम ह्रीं राम
श्रीं राम श्रीं राम - क्लीं राम क्लीं राम!
फट् राम फट् रामाय नमः!

राम नाम रोज 108 बार जप करने से हर मनोकामना पूरी हो जाती है। रां - 'रामाय नमः' मंत्र का जप करने से राज्य लक्ष्मी, पुत्र, आरोग्य की प्राप्ति के साथ विपत्तियों का नाश हो जाता है। कार्यों में आ रही बाधाओं को दूर करने केलिए इसका जप करे - 'ॐ रामभद्राय नमः'; 'श्रीराम जय राम जय जय राम' यह मंत्र सबसे अधिक असरकारक माना जाता है। श्रीराम गायत्री मंत्र के जप से समस्त संकटों का शमन होने के साथ-साथ ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होते हैं।

ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि,
तन्नो रामः प्रचोदयात्।

'ॐ रामाय धनुष्पाणये स्वाहा'; 'ॐ हनुमते श्रीरामचन्द्राय नमः।' - इस मंत्र का जप करने से एक साथ कई कार्यसिद्धि, शत्रु शमन, न्यायालय आदि की समस्याओं से छुटकारा मिल जाता है।

सतयुग में तप से, त्रेतायुग में यज्ञ से, द्वापरयुग में दान से जो फल मिलता है, कलियुग में केवल राम नाम स्मरण से ही उस फल की प्राप्ति हो जाती है। गोस्वामी जी कहते हैं। **'प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते प्रकट होहि में जाना'** अर्थात् परमात्मा तो हमारे बिल्कुल ही पास है, जरूरत है उसके नाम स्मरण की। संसार चल ही राम नाम से रहा है। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु सभी में जो शक्ति है वो सब राम नाम की है। राम नाम अविनाशी है। राम नाम की महिमा तो ये है की सदाशिव भोले शंकर भी राम नाम जपते रहते हैं।

राम नाम तो मणिदीप की तरह है। राम नाम के जप से अंतःकरण और बाहरी आचरण दोनों प्रकाशित हो जाते हैं। राम से बड़ा राम का नाम महिमान्वित है। श्रीराम का अर्थ है प्रभु श्रीराम को पुकारना। यह भगवान राम के प्रति पुकार है। जय-राम यह उनकी स्तुति है 'जय-जय राम' - यह उनके प्रति पूर्ण समर्पण है। प्रतिदिन भगवान श्रीराम के मंत्रों का जप करने से मनचाही कामना पूरी होती है।

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्!!

श्रीरामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे!
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः!!

राम नाम की महिमा के बारे में एक कथा कबीर के पुत्र कमाल की है। एक बार राम नाम का प्रभाव कुछ ऐसा हुआ कि कमाल द्वारा एक कोढ़ी का कोढ़ दूर हो गया। इससे कमाल को यह लगने लगा कि राम नाम की महिमा को वो पूरी तरह जान गए हैं। इससे कबीर जो कोई प्रसन्नता नही हुई। कबीर जी ने कमाल को तुलसीदास जी के पास भेजा। तुलसीदास जी ने तुलसी के पत्र पर राम नाम लिखा और उसे एक जल में डाल दिया। इस जल को पीकर 500 कोढ़ी ठीक हो गए। फिर कमाल को लगने लगा कि राम नाम का तुलसी पत्र पर लिखकर जल में डालने और उसे पीने से 500 कोढ़ियों को ठीक किया जा सकता है। राम नाम की इतनी महिमा है। लेकिन इससे भी कबीर जी प्रसन्न नहीं हुए। उन्होंने कमाल को सूरदास के पास भेजा!!

सूरदास जी ने गंगा में बह रहे एक शव के कान में राम नाम लिया। उन्होंने इतना कहने से ही शव जीवित हो

उठा!! संत सूरदास जी ने गंगा में बहते हुए एक शव के कान में केवल 'र' कहा और शव जीवित हो गया। तब कमाल को लगा कि राम नाम के केवल 'र' अक्षर से ही मुर्दा जीवित हो उठा। राम नाम की महिमा बहुत ज्यादा है। इस पर कबीर जी ने कमाल से कहा कि सिर्फ इतनी ही महिमा नहीं है राम नाम की!!! तुलसीदास जी कहते हैं-

राम ब्रह्म परमार्थ रूपा।

अर्थात् - ब्रह्म ने ही परमार्थ के लिए राम रूप धारण किया था!!

ग्रह क्लेश निवारण और सुख संपत्ति दायक-

हे राम पुरुषोत्तम नरहरे नारायणा केशवा।
गोविन्दा गरुड़ध्वजा गुणनिधे दामोदरा
माधवा! हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते।

पुराणों के अनुसार राम नाम की महिमा और राम का अर्थ–

राशब्दो विश्ववचनो मश्चापीश्वरवाचकः।
विश्वानामीश्वरो यो हि तेन रामः प्रकीर्तितः!!
रमते रमया सार्वं तेन रामं विदुर्बुधा।
रमाया रमणस्थानं रामं रामविदो विदुः!!
राश्चेति लक्ष्मीवचनो मश्चापीश्वरवाचकः
लक्ष्मींपतिं गतिं रामं प्रवदन्ति मनीषिणः।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां स्मरणे यत्फलं लभेत्।
तत्फलं लभते नूनं रमोच्चारणमात्रतः

ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खण्ड अध्याय 111.18-21.

श्रीराधा जी द्वारा 'राम' नाम की व्याख्या। श्रीराधा जी कहती है। 'रा' शब्द विश्ववाचक है और 'म' शब्द ईश्वरवाचक है, इसलिए जो सारे लोकों का ईश्वर है उसी कारण वह 'राम' कहा जाता है। 'रा' लक्ष्मीवाचक है और 'म' ईश्वरवाचक है। इसलिए मनीषीगण लक्ष्मीपति को राम कहते हैं। सहस्रों दिव्य नामों के स्मरण से जो फल प्राप्त होता है, वह फल निश्चय ही राम शब्द के उच्चारण मात्र से मिल जाता है।

हनुमान जी ने कही राम नाम की महिमा। श्रीराम देख रहे थे उनका नाम लिख कर पत्थर पानी में डालते हैं तो वह तर जाते हैं। श्रीराम मन में विचार करने लगे कि मेरे नाम से पत्थर तर जाते हैं तो समुद्र में मेरे द्वारा डाला गया पत्थर भी तर जाएँगे... अर्थात् श्रीराम का नाम भव सागर से तारने वाला है।

श्रीरघुवीर भक्त हितकारी
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी
निशि दिन ध्यान धरै जो कोई
ता सम भक्त और नाहिं होई

जिनके मन में श्रीराम है भाग्य में उसके वैकुंठ धाम है। अनेक विद्वानों ने उन्हें

मर्यादा पुरुषोत्तम की संज्ञा दी है। अपने शील और पराक्रम के कारण भारतीय समाज में उन्हें जैसी लोकपूजा मिली वैसी संसार के अन्य धार्मिक या जननेता को शायद ही मिली हो।

राम नाम जाप से साधक पवित्र हो जाता है। वे जहाँ चलते हैं वहाँ का वातावरण पवित्र हो जाता है। रम धातु में 'घञ्' प्रत्यय के योग से 'राम' शब्द निष्पन्न होता है। 'रम्' धातु का अर्थ रमण, करने से सम्बद्ध है। वे प्राणीमात्र के हृदय में निवास करते हैं। इसलिए राम है। 'रमते कणे कणे इति रामः।' महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण के बालकाण्ड में श्रीराम के जन्म का उल्लेख किया गया है। जन्म सर्ग 18वें श्लोक 18-8-10 में महर्षि वाल्मीकी जी ने उल्लेख किया है कि श्रीराम जी का जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को अभिजित मुहूर्त में हुआ!! आधुनिक युग कंप्यूटर द्वारा गणना करने पर यह 21 फरवरी 5115 ई. पूर्व निकलता है।

मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। अनेक जन्मों के पुण्य का फल देखते श्रीहरि की हेतु कृपा से मानव शरीर की प्राप्ति होती है। सात हजार बार गंगा स्नान करो, करोड बार पुष्कर स्नान करने से भी जो पाप नष्ट नहीं हो जाते वे श्रीहरि के स्मरण करता है वह सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। प्राण निकलते समय जिस प्राणी के मुँह से भगवान श्रीराम का नाम शब्द निकल आता है, वह प्राण त्यागकर संसार सागर से पार चला जाता है।

राम नाम सदा प्रेरणा संस्मरामि जगद्गुरुम् क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम!! मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम समसामयिक है। भारतीय जनमानस के रोम-रोम में बसे श्रीराम की महिमा अपरंपार है।

एक राम राजा दशरथ का बेटा,
एक राम घर-घर में बैठा
एक राम का सकल पसारा
एक राम सारे जग से न्यारा!!

भगवान की सभी चीजें अनंत हैं अर्थात् भगवान का नाम, गुण, लीला, शक्तियाँ इत्यादि सब अनंत-अनंत मात्रा की है। इसलिए भगवान स्वयं भी अगर नाम की महिमा करने बैठे। तो अनंत काल तक नाम की महिमा गाते रहेंगे, लेकिन नाम की महिमा खतम नहीं होगी।

भारतीय समाज में राम ने जीवन का जो आदर्श रखा स्नेह और सेवा के जिस पथ का अनुगमन किया उसका महत्व आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है। वे भारतीय जीवन दर्शन और भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक थे। उनके सत्यनिष्ठ जीवन से भारत ही नहीं विदेशों के भी मैक्समूलर आदि विद्वान् आकर्षित हुए हैं। प्रत्येक हिन्दु परिवार में देखा जा सकता है कि बच्चे के जन्म में राम के नाम का सोहर होता है। वैवाहिक आदि सुअवसरों पर राम के गीत गाए जाते है। राम सर्वमय व सर्वमुक्त है। राम सबकी चेतना का सजीव नाम है।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद

आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

मोबाइल - 9849670868

कथा क्रम

नैमिशारण्य :

जंबीर, मंदार, सहकार, मालूर, साल, रसाल, वट, बिल्व, बदरिक, अश्वत्थ, चंदन, कुंद, तक्कोल, नारियल, खजूर, नारंगी, बंधूक, पारिजात, अशोक, कादंब, कांचन, करवीर, पुन्नाग, मधूक आदि बहु वृक्षों से भरा, विविध लताएँ फूलों से और फलों लब लब लदकर, सर्वकालों में वसंत ऋतु की तरह ही सदा सुशोभित थीं नैमिशारण्य में। झरनें, कमलों से भरे सरोवर, सारे सरोवर जल से भरे हुए थे, सभी कालों में एक जैसा लग रहे थे बुध जनों की सेवा के लिए।

शौनकादि के प्रश्न :

ऐसे नैमिशारण्य में शौनकादि मुनिगण ने सूत मुनि से सारे पुराणों का प्रवचन सुन कर एक शुभ दिन सूत को देखकर 'एक सौ आठ दिव्य तिरुपति हैं, उन में श्रीरंगम, श्रीमुष्णम, तोताद्री, सालग्राम, नैमिशम, बदरिकाश्रम, कांचीपुरम, वेंकटाचलम ये आठ स्वयंव्यक्त तीर्थ हैं, इन में सब से सकल इष्ट-प्रदायी तीर्थ कौन सा है? बताइए।' प्रश्न किया। और भी उन्होंने इस रूप में प्रश्न किया।

'अत्यंत मुग्ध-बृहद अर्चारूपधारी नारायण के भूतल में भक्तों का उद्धार करनेवाला प्रचलित तीर्थ की कथा को हमें आप सुनाइए, हे सूत जी!'

सूत जी का समाधान :

शौनकादि मुनियों के प्रश्न को सुन कर सूत जी हँस कर बहुत अच्छा। आप ने लोकहितकारी सवाल किए। कथा सनुाने से और सुनने से लक्ष्मी का वरदान हम सब को प्राप्त होगा। इसलिए मैं बहुत आनंद से वह कथा सुनाऊंगा। 'हे मुनिगण, शांत मन से अत्यंत संतोष के साथ कथा सुनिए। वेदव्यास की कृपा से जो कुछ मेरे पास है मैं सुनाऊंगा, उस परमात्मा की कथा को हे मुनिगण सुनिए। स्वयं व्यक्त तीर्थों में 'वेंकटाचल' बहु फलदायक और पवित्र तीर्थ है। श्वेतवराह कल्प में वर्णित इस पुण्य तीर्थ के वृत्तांत को मन लगाकर सुनिए।'

ब्रह्म का दिन और रात :

नारायण स्वामी के नाभि कमल से ब्रह्म का जन्म हुआ। सृष्टि के सृजन क्रम में उन्होंने अशेष प्राणियों समेत संसार का सृजन किया। अत्यंत निपुणता से चारों युगों में अत्यंत सावधानी के साथ विश्व का निर्माण किया। तब सूर्य-चंद्र, सागर आदि अपनी सीमाओं में विचरण करते थे। अपनी महिमा से चतुर्दश मनुओं के रूप में विष्णु भगवान के विश्व भर पालन करने से ब्रह्म के लिए एक दिन पूरा हो गया। रात होते ही ब्रह्म सो गए। ब्रह्म के रात को सो जाने से सूर्य उग्र रूप धारण करके अपनी किरणों से विश्व को जलाने लगे। तब स्थावर जंगम सारे प्राणी हताहत हुए। मानो प्रलय ही आ गया, ऐसा वायु आकाश से भीकर रूप में बहने लगी। मेघ संवर्त रूप धारण करके आकाश में गर्जन करने लगे। बिजली चमकने लगी। धरती के कांपने की तरह मूसलधार वर्षा होने लगी। धरती पानी से भर कर धारण करने की स्थिति समाप्त होने से पानी में डूबने लगी। तब हिरण्यलोचन स्वामी प्रकट हुए।

श्वेत वराह स्वामी का अवतरित होना :

श्वेत वराह स्वामी धरती को रसातल से ऊपर उठाकर वहीं कई दिन क्रीडा करने लगे। तब फिर ब्रह्म जाग गए। फिर हरि ने पुनःसृष्टि करने के लिए तैयार होकर श्वेत वराह स्वामी का रूप धारण किया। महाजल के अंदर पैठ कर रसातल में डूबी धरणी को ऊपर उठाते समय हिरण्याक्ष ने उन का विरोध किया। युद्ध के लिए ललकारा। उसने वराह स्वामी के साथ घोर युद्ध किया। उस युद्ध में स्वामी ने हिरण्याक्ष के सर को अनेक टुक़डों में तोड दिया। तब सागरों का पूरा जल रक्तवर्ण में बदल गया। तब उस जल को देखकर लोकवासी भयभीत होकर निज योग दृष्टि से समझ लिया कि यह सब कोप रूप धारण करनेवाले वराह स्वामी के कारण है। उन के इस रूप को शांत करने के रास्ते ढूंढते समय श्वेत वराह स्वामी अपने दांतों से पृथ्वी को ऊपर उठाकर लोकवासियों की रक्षा की है। तब इंद्रादि देवताओं ने इस दृश्य को देखकर वराहस्वामी की वंदना की है। भेरी, मृदंग आदि वाद्य बजाकर उन का जय जयकार किया। फूलों की वर्षा करवायी। अनेक प्रकार से विनति करते हुए इस रूप में कहा--

''हे हरि! वराह रूपधारी स्वामी! भयंकर राक्षस का संहार करके धरती को यहाँ पर लाकर आप ही पानी पर फिर से धरती को खडा कीजिए। यह विनति सुनकर वराह स्वामी ने हर्ष के साथ अपने हाथों से महाजलों को रोक कर पानी पर धरती को खडा किया। लोकवासियों के साथ-साथ इंद्र की विनति को स्वामी ने इस रूप में पूरा किया। फिर सारे देवताओं को अपने-अपने स्थानों को लौट जाने की आज्ञा दे कर, ब्रह्म की तरफ देखकर उन्हें जगा कर पहले की तरह सृष्टि रचने की आज्ञा दी। सारे देवताओं को विदा किया। फिर अपनी ओर श्रद्धा से देखनेवाले पक्षेंद्र गरुड से इस रूप में कहा।''

वराह देव के द्वारा गरुड को वैकुंठ भेजना :

''धरणी के पानी में डूब जाने के कारण उसे बचाने के लिए मैंने इस उग्र रूप को धारण किया। मेरे इस रूप पर मोहित होकर भूदेवी ने कामना प्रकट की है। मैं भी भूदेवी के रूप लावण्य से मोहित हो गया। इस रूप में लक्ष्मी मुझ से प्रेम नहीं करेगी। हे खगेंद्र! मेरे इस भयंकर भीकर रूप देखकर, कठोर उग्र बातें सुनकर लक्ष्मी शायद भयकंपित हो जाएगी। मुझे देखना भी पसंद नहीं करेंगी। इसलिए मैं किस रूप में वैकुंठ आ सकता हूँ? परिहास में लक्ष्मी मुझे देखकर आप कौन है? ऐसा सवाल भी कर सकती है। तब मुझे अपने को विष्णु बताने में लज्जित होना पडेगा। इसलिए मैं वहाँ पर नहीं आऊंगा। किसी भी रूप में भूदेवी को छोड कर मैं नहीं आ

सकता।'' वराह स्वामी की बातें सुनकर गरुड ने उन से कहा। ''हे देव! धरणी की रक्षा करने के लिए राक्षस का संहार करने अत्यंत अद्भुत ढंग से आपने इस रूप को धारण किया है। आप के इस कृत्य से सारे देवताओं ने आप की स्तुति की है। इसलिए संदेह न करके आप शीघ्र ही पधारिए। संदेह मत कीजिए देव! मैं आप की वंदना करता हूँ। आप की अनपाइनी बन कर माँ लक्ष्मी सदा आप के वक्षःस्थल में ही रहेंगी। आप के इस सूकर रूप को देख कर भी उन्हें भय नहीं होगा। हे महात्मा! आप ऐसा मत सोचिए। आप सर्वज्ञ हैं, आप को क्या नहीं मालूम है? अपनी ओर से सोच कर मैंने यह विनति की है देव! अब आप को मन में जो आयेगा आप ही निर्णय कर लीजिए। जगत के लिए भी वही हितकारी होगा।'' ऐसा गरुड ने पुनः स्वामी को नमस्कार करते हुए विनति की है।

फिर वराह स्वामी ने गरुड की ओर करुणा दृष्टि से देख कर कहा। ''हे महाशक्तिवान! खगेंद्र! अब मैं वहाँ नहीं आऊंगा। धरती पर रहनेवाले दानवों का संहार करके शिष्ट जनों की रक्षा करूँगा। अब तुम शीघ्र ही वैकुंठ पहुँच कर लक्ष्मी को यह समाचार देकर क्रीडाचल को उठाकर यहाँ पर ले आओ। अब तुम निकलो।'' तब गरुड ने स्वामी को नमस्कार करके वैकुंठ का रास्ता नापा।

इधर वराह स्वामी ने बसने के लिए धरती पर अपने लिए अनुकूल प्रदेश खोज करना शुरू किया। चारों तरफ उन्होंने अनेक प्रदेश देखे। स्वामी तब गोदावरी नदी के दक्षिण में साठ योजनाओं से दूर पूरब में सागर से पश्चिम में पाँच योजनाओं से दूर दक्षिण में रहनेवाली सुवर्णमुखी के उत्तर में स्थित एक दिव्य स्थल को देखा। उन्हें वह अनुकूल लगा। तब वे गरुड के लौटने की प्रतीक्षा करने लगे।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'

५. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

स्वस्थ विश्व के लिए 'पंचगव्य'

अंग्रेजी मूल - अत्ति रंगराजन्
हिंदी अनुवाद - डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी
मोबाइल - 9703035959

'पंचगव्य' हमारे आधुनिक समय की कई समस्याओं का सदियों पुराना और हितकर समाधान है। गाय की पूजा केवल हिंदू धर्म का एक अभिन्न अंग नहीं है, अपितु पवित्र पशु से प्राप्त प्रत्येक उत्पादक का मानव जीवन पर प्रभाव माना जाता है। चूंकि एक माँ बच्चे के विकास और विकास के हर पहलू का ध्यान रखती है, इसलिए हिंदु धर्म में गाय को 'गोमाता' के रूप में सम्मानित किया जाता है।

'पंचगव्य' गाय से प्राप्त पांच सामग्रियों जैसे 'गोबर, गोमूत्र, दूध, दही और घी' का उपयोग करके तैयार किया गया एक पारंपरिक मिश्रण है। 'पंच' का अर्थ है पांच और 'गव्य' का अर्थ है गाय से प्राप्त उत्पाद। आयुर्वेद का प्राचीन औषधीय पाठ कई बीमारियों के लिए 'पंचगव्य' को एक अमृत के रूप में निर्धारित करता है और इसे कई बीमारियों के लिए एक निवारक दवा के रूप में भी सुझाता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) जनता के लिए कुछ बेहतरीन गाय-आधारित उत्पादों की पेशकश कर रहा है। इस विशाल छलांग को हाल के दिनों में शुरू किए गए गाय-आधारित कार्यक्रमों की श्रृंखला के विस्तार के रूप में देखा जाता है, जैसे कि 'गो आधारित व्यवसाय(गो आधारित खेती)'; 'गुडिको गोमाता(हरेक मंदिर के लिए एक गाय)'; 'गोविन्दुनिकी गो आधारित नैवेद्य(भगवान गोविंद को गो आधारित नैवेद्य)'; 'गोपूजा' सभी मंदिरों में; 'नवनीत सेवा' और अलिपिरि के पास 'गो मंदिर' का निर्माण। पंचगव्य उत्पादों की शुरुआत को गो संरक्षण शाला से प्राप्त गोबर, गोमूत्र और दूध जैसे संसाधनों के इष्टतम उपयोग की दिशा में एक तार्किक कदम के रूप में भी देखा जाता है।

यद्यपि 'पंचगव्य' से प्राप्त कई जटिल औषधीय उत्पाद हैं, टी.टी.डी. अपने गोशाला से सरल, लेकिन प्रभावी उत्पाद बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। कोविड-19 के आगमन ने प्राकृतिक और रासायनिक मुक्त उत्पादों की भी अधिक मांग पैदा कर दी है, जो कि गोबर और गोमूत्र से सबसे अधिक उत्पादित होंगे।

अलिपिरि में डी.पी.डब्ल्यू.स्टोर कांप्लेक्स में एक विशाल विनिर्माण सुविधा आई है जहाँ टी.टी.डी. हर्बल साबुन, टूथ पाउडर, हैंड वॉश लिक्विड, नेजल ड्रॉप्स, आगरबत्ती, 'गो अर्का' (परिष्कृत गोमूत्र), फेस पैक, धूप कोन का उत्पादन कर रहा है। होमम करने के लिए धूप के प्याले, धूप पाउडर, 'विभूति' और गाय के गोबर के केक को होमम् में समर्पित करते है। मच्छर कॉइल और अन्य उत्पादों को भी उनकी प्रभावकारिता का परीक्षण करने के बाद शीघ्र ही शुरू किया जाएगा।

प्रत्येक उत्पाद में गोबर, गोमूत्र या घी होता है, जिसे उत्पादन चरण में पेश किया जाता है। उत्पाद श्रृंखला को 'नमामि गोविंदा' नाम दिया गया है, जो जनता को यह दर्शाता है कि उत्पाद सर्वशक्तिमान भगवान 'गोविंद' को समर्पित हैं। नाम में 'गो' शब्द भी है, जिससे गाय को कच्चे माल के दाता के रूप में उचित श्रेय मिलता है। टी.टी.डी. की श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला सैकडों देशी गायों के आवास के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करती है, जबकि श्रीनिवास आयुर्वेदिक फार्मेसी, टी.टी.डी. की एक अन्य शाखा, अंतिम उत्पाद के लिए आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन प्रदान करती है। कोयंबटूर स्थित कंपनी आशीर्वाद आयुर्वेद, आयुर्वेदिक उत्पादों के बड़े पैमाने पर उत्पादन में अपने अनुभव को देखते हुए तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

उत्पाद लाइन में प्रत्येक वस्तु का नाम पृथ्वी के नाम पर रखा गया है, यह दार्शनिक नोट देता है कि सब कुछ पृथ्वी का है और हम सब कुछ प्रकृति माँ के ऋणी हैं। धूप चूर्णम को 'अवनि', अगरबत्ती को 'धरणी, सांभरनी कप को 'धात्री', धूप को 'वैष्णवी',

Sl. No.	Name of the Product	Weight / Volume	Sale Price
1.	Avani - Dhoop Choornam	50 gms	70/-
		100 gms	115/-
2.	Dharani - Dhoop Agarbatti	12 sticks	60/-
		24 sticks	110/-
3.	Dhaatri - Dhoop Cups	6 cups	70/-
		12 cups	110/-
4.	Vaishnavi - Dhoop Sticks	20 sticks	30/-
5.	Varahi - Dhoop Cones	12 cones	30/-
		24 cones	50/-
6.	Prithvi - Vibhooti	10 gms	30/-
		30 gms	40/-
		50 gms	60/-
		100 gms	100/-
7.	Dhanshika - Tooth Powder	50 gms	40/-
		100 gms	60/-
8.	Hiranmayi - Face Pack	50 gms	110/-
		100 gms	200/-
9.	Mahi - Soap	25 gms	40/-
		75 gms	80/-
		100 gms	110/-
10.	Kashyapi - Shampoo	5 ml	10/-
		100 ml	210/-
11.	Urvi - Nasal Drops	10 ml	100/-
12.	Nandini - Go Ark	200 ml	50/-
		500 ml	110/-
		1 ltr.	200/-
13.	Bhumi - Floor Cleaner	1 ltr.	250/-
		5 ltr.	1050/-
14.	Ksama - Cow Dung Cakes	10 nos.	140/-
		12 nos.	170/-
15.	Bhuvati - Cow Dung Logs	06 nos.	90/-
		12 nos.	180/-

Executive Officer, T.T.D., Tirupati

धूप को 'वराही, विभूति पाउडर को 'पृथ्वी', हर्बल टूथ पाउडर को 'धंशिका' नाम दिया गया है।' 'हिरण्मयी' के रूप में हर्बल फेस पाउडर, 'मही' के रूप में हर्बल साबुन, 'कश्यपि' के रूप में हर्बल शैम्पू, 'उर्वी' के रूप में नाक की बूंदें, 'नंदिनी' के रूप में गो अर्का, 'रिमास साप' के रूप में दर्द बाम, औषधीय नाक की बूंदों के रूप में 'निंबा नस्यम', 'स्वास्थ्य गंडुशा' के रूप में मौखिक गरारे के लिए पाउडर, 'अमृत' के रूप में गोलियाँ और 'रक्षोगना धूपम' के रूप में धूपम पाउडर। साबुन 'मही' छह प्रकारों में उपलब्ध है, जो डोलोमाइट और मोम युक्त साबुन को मिश्रण में स्वाद का प्रतिनिधित्व करने वाले आवश्यक तेल को सम्मिलित करके प्राप्त किया जाता है।

चूंकि 'धूपम' के रूप में धुआं हिंदू रीति-रिवाजों में बहुत महत्व रखता है, धूप सामग्री को उपयुक्त अवसरों के लिए उपयोग किए जाने वाले बार, शंकु और पाउडर के रूप में उपलब्ध कराया जाएगा। कोविड-19 महामारी ने यह भी साबित कर दिया है कि धुएं को फ्युमिगेटिंग सामग्री के रूप में उपयोग करने से वातावरण को साफ रखकर वायरस से छुटकारा पाया जा सकता है। संपीडित गाय के गोबर को केक या लॉग के रूप में बनाया जाता है, जिसे 'होमगुंडम' और अन्य प्रकार के अनुष्ठानों में उपयोग किया जाता है।

'विभूति' को अपने शुद्धतम रूप में प्राप्त करना एक लंबी प्रक्रिया है, जिसे टी.टी.डी. प्रबंधन उपयोगकर्ताओं को एक विश्वसनीय समाधान प्रदान करने के लिए इस संयंत्र में श्रमसाध्य रूप से अपना रहा है। गाय के गोबर को जलाने से राख मिलती है, जो खुले बाजार में 'विभूति' के सस्ते संस्करण के रूप में बिकती है। लेकिन यहाँ वही एक विस्तृत प्रक्रिया में किया जाता है। पारंपरिक प्रथा यह है कि गोबर को 'होमगुंडम' में पांच बार, हर बार पांच तत्वों जैसे आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी से मिलते-जुलते गुंडम में जलाया जाता है। 'होमगुंडम' विशेष रूप से निर्मित ईंटों, सीमेंट और मिट्टी से बने होते हैं जो 300 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान का सामना कर सकते हैं।

सबसे पहले, गोबर को सौर कक्ष में सूर्य के नीचे निर्जलित किया जाता है। हर बार पहले गुंडम में धान की भूसी, कपूर, गाय के घी (घृतम) और 'ध्रुव' (गरिका घास) के साथ 100 किलो निर्जलित गोबर जला दिया जाता है, जो 20 किलो राख हो जाता है। फिर इसे अगले गुंडम में पेश किया जाता है और इस प्रक्रिया को तब तक दोहराया जाता है जब तक कि पांचवाँ गुंडम शुद्ध सफेद 'विभूति' प्रदान नहीं कर देता। भारी सामग्री हर बार हल्की हो जाती है, जो पृथ्वी (भारी) से वायु (प्रकाश) का प्रतिनिधित्व करने वाले 'होमगुंडम' से स्थानांतरित होने पर प्रतीकात्मक रूप से प्रदर्शित होती है।

टी.टी.डी. के प्रयास को न केवल इस तरह के गाय-आधारित उत्पादों को जनता के लिए उपलब्ध कराने की दिशा में एक अग्रणी पहल के रूप में देखा जाता है, बल्कि प्राचीन आयुर्वेदिक प्रथाओं को पुनर्जीवित करने और समय-परीक्षणित औषधीय प्रणाली में लोगों के विश्वास को बहाल करने के लिए भी किया जाता है। व्यापक अर्थों में, इस गतिविधि को दुनिया को रहने के लिए एक स्वस्थ स्थान बनाने के रूप में देखा जाता है।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

खरमु पालु देच्चि काचि चक्केर वेय
भक्ष्यमगुने? येन्न भ्रष्टुडटेल
येंत जेप्पि चिवर नेसगिंप नेर्चुना?
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ॥८॥

गधे का दूध अच्छी तरह औटा कर, उसमें लाख मन शक्कर डाला जाये, वह कहीं पीने योग्य बन जाता है? भ्रष्ट-चरित्र वाले मनुष्यों की भी यही दशा है। उन्हें कोई कितना ही समझावे वे अपना हठ नहीं छोड़ सकते।

मई २०२२

०३ अक्षयतृतीया, श्री परशुराम जयंती
०५ श्री रामानुज जयंती
०६ श्री शंकराचार्य जयंती
१०-१२ तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
१३-२१ ऋषिकेश, नारायणवनम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१४ श्री नृसिंह जयंती
१४-१७ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
१५ श्री कूर्म जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
१६ श्री अन्नमय्या जयंती
१७ तिरुपति गंगजातरा (मेला)
२३-३१ कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
२५ श्री हनुमज्जयंती

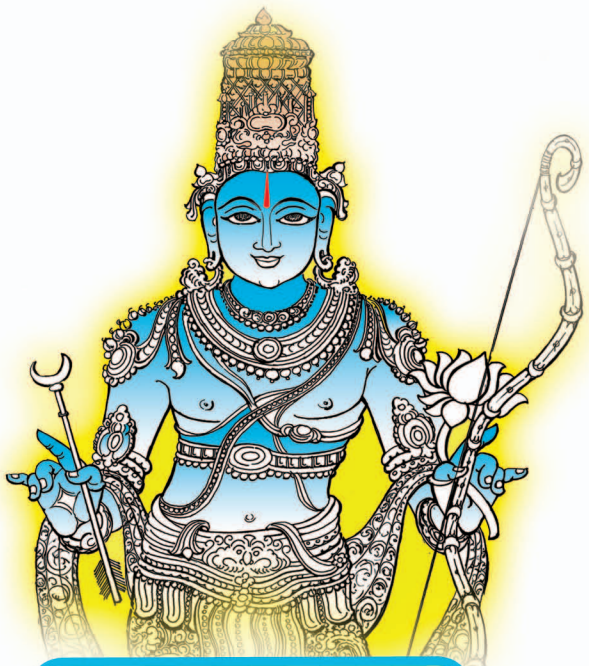

श्रीरामनवमी पूजाविधान

प्रातःकाल जाग कर, स्नान आदि नित्य कामों को पूरा करके, शुद्ध होकर, तुलसी, पुष्प, फल आदि पूजाद्रव्यों को तैयार करके श्रीराम के चित्रपट को या विग्रह की पूजा यथा प्रकार करना है।

श्री केशव आदि-नामों से आचमनीय करने के बाद प्राणायाम करके - संकल्प लेना है।

मम उपात्त दुरितक्षय के द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं शुभेशोभने मुहूर्त्ते श्री महाविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे कलियुगे प्रथम पादे, जंबूद्वीपे, भरतवर्षे, भरतखंडे मेरोः ... दिग्भागे, श्रीशैलस्य ... प्रदेशे, गंगागोदावर्योः मध्यदेशे, अस्मिन् वर्तमान व्यावहारिक चान्द्रमानेन स्वस्तिश्री ... नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसंत ऋतौ चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवम्यां ... वासरे शुभनक्षत्र, शुभयोग, शुभकरण एवंगुण विशेषण विशिष्टायं श्रीमान् ... गोत्रः धर्मपत्नी समेतः ... नामधेयः, श्रीमतः ... गोत्रस्य ... नामधेयस्य सहकुटुंबस्य क्षेम स्थैर्य धैर्य आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थं, जांबवत्सुग्रीव-हनुमत्-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न परिवार समेत श्री सीतारामचन्द्र देवता प्रीत्यर्थं, श्री सीतारामचन्द्र देवता प्रसाद सिद्धयर्थं षोडशोपचार पूजां करिष्ये... ऐसे संकल्प करके, कलश की आराधना करके - कलश पर हाथ रखकर -

श्लोक :

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः
मूले तत्रस्थितो ब्रह्म मध्ये मातृगणाः स्थिताः।।
कुक्षौतु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा।
ऋग्वेदोधयजुर्वेदो स्सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहितास्सर्वे कलशांबु समाश्रिताः।
गंगेच यमुने कृष्णे गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

- (कलश के जल को फूल से या तुलसी पत्रों से लेकर देवता की प्रतिमा पर प्रोक्षण करके, अपने ऊपर छिलककर, पूजाद्रव्यों पर छिलककर-) अदौ निर्विघ्नेन परिसमाप्यर्थं श्री महागणपति पूजां करिष्ये - (गणपति की पूजा करने के बाद) पूर्व संकल्पित श्री सीतारामचन्द्र पूजां करिष्ये - कहकर पूजा की शुरुआत करना है।

ध्यान :

वामेभूमिसुता पुरस्तु हनुमान पश्चात्सुमित्रा सुतः।
शत्रुघ्नोभरतश्च पार्श्वदलयोः वायूव्यादि कोणेषु च।।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट्तारासुतो जांबवान्।
मध्ये नीलसरोज कोमलरुचिं रामं भजे श्यामलं।।

श्लोक :

कंदर्पकोटि लावण्यं - मंदस्मित शुभेक्षणं।
महाभुजं श्यामवर्णं - सीतारामं भजाम्यहं।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनं :

श्रीरामागच्छ भगवन् - रघुवीर नृपोत्तम।
जानक्या सह राजेन्द्र - सुस्थिरो भवसर्वदा।।

श्लोक :

रामचन्द्र महेष्वास - रावणांतक राघव।
यावत्पूजां सामाप्येहं - तावत्त्वं सन्निधिं कुरु।।

श्लोक :

रघुनायक राजर्षे - नमो राजीवलोचन।
रघुनंदन मे देव - श्रीरामाभिमुखो भव।।
श्री सीतारामचंद्र परमात्मने नमः आवाहयामि।

सिंहासन :

राजाधिराज राजेन्द्र - रामचन्द्र महाप्रभो।
रत्नसिंहासनं तुभ्यं - दास्यामि स्वीकुरु प्रभो।।
श्री सीतारामचंद्र परमात्मने नमः नवरत्नखचित सिंहासनं समर्पयामि।

पाद्यं :

त्रैलोक्य पावनानंत - नमस्ते रघुनायक।
पाद्यं गृहाण राजर्षे - नमो राजीवलोचना।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं :

परिपूर्ण परानंद - नमो राजीवलोचन।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं - कृष्णविष्णो जनार्धना।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनं :

नमो नित्याय शुद्धाय - बुद्धाय परमात्मने।
गृहाणाचमनं राम - सर्वलोकैकनायक।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः मुखे आचमनं समर्पयामि।

मधुपर्कं :

नमः श्रीवासुदेवाय - बुद्धाया परमात्मने।
मधुपर्कं गृहाणेदं - राजराजायते नमः।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पंचामृतस्नान :

क्षीरं दधि घृतं चैव - शर्करा मधु संयुतं।
सिद्धं पंचामृत स्नानं - राम त्वं प्रतिगृह्यतां।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान :

ब्रह्मांडोदरमद्यस्थं - तीर्थैश्च रघुनंदन।
स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या - संगृहाण जनार्दना।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः स्नानानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रं :

संतप्त कांचन प्रख्यं - पीतांबरयुगं शुभं।
संगृहाण जगन्नाथ - रामचन्द्र नमोस्तुते।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।
अनंतर आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं :

अज्ञानध्वंसनं नणां प्रज्ञाकरमनुत्तमं।
धरं यज्ञोपवीतं मे वांछितार्थ फलप्रद।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरणानि :

कौस्तुभाहार केयूर - रत्न कंकण नूपुरान्।
एवमादी नलंकारान् - गृहाण जगदीश्वर।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः आभरणान् समर्पयामि।

गंधं :

कुंकुमागरु कस्तूरी - कर्पूरै र्मिश्र संभवम्।
तुभ्यं दास्यामि देवेश - श्रीराम स्वीकुरु प्रभो।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः श्रीगंधं समर्पयामि।

पुष्पं :

तुलसीकुंदमंदार जातीपुन्नागचंपकैः।
नीलांबुजैर्बिल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्च राघव।।
पूजायिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाण जनार्धना।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः नानाविध परिमलपत्र पुष्पाणि समर्पयामि।

वनमाला :

तुलसी कुंद मंदार - पारिजातांबुजैर्युतां।
वनमालां प्रदास्यामि - गृहाण जगदीश्वर।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः वनमालां समर्पयामि।

अंगपूजा

ॐ रामाय नमः	पादौ पूजयामि
ॐ रामभद्राय नमः	जंघे पूजयामि
ॐ रामचन्द्राय नमः	जानुनी पुजयामि
ॐ शाश्वताय नमः	ऊरु पूजयामि
ॐ रघुवल्लभाय नमः	कटिं पूजयामि
ॐ दशरथात्मजाय नमः	उदरं पूजयामि
ॐ कौशलेयाय नामः	नाभिं पूजयामि
ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमः	वक्षस्थलं पूजयामि
ॐ कौस्तुभाभरणाय नमः	कंठं पूजयामि
ॐ राजराजाय नमः	स्कंधौ पूजयामि
ॐ कोदंडधराय नमः	बाहू पूजयामि
ॐ भरताग्रजाय नमः	मुखं पूजयामि
ॐ पद्मनाभाय नमः	नेत्रौ पूजयामि
ॐ रमाय नमः	कर्णौ पूजयामि
ॐ सर्वेश्वराय नमः	शिरः पूजयामि

श्री रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः सर्वांगन्यानि पूजयामि
ततः श्रीरामाष्टोत्तर शतनाम पूजां कुर्यात्

श्रीरामाष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ श्रीरामाय नमः
ॐ रामभद्राय नमः
ॐ रामचन्द्राय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ राजीवलोचनाय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ राजेंद्राय नमः
ॐ रघुपुंगवाय नमः
ॐ जानकीवल्लभाय नमः
ॐ जैत्राय नमः १०

ॐ जितामित्राय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः
ॐ दांताय नमः
ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः
ॐ वालिप्रमथनाय नमः
ॐ वाग्मिने नमः
ॐ सत्यवाचे नमः
ॐ सत्यविक्रमाय नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः २०

ॐ व्रतधराय नमः
ॐ सदाहनुमदाश्रिताय नमः
ॐ कौसलेयाय नमः
ॐ खरध्वंसिने नमः
ॐ विराधवधपंडिताय नमः
ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः
ॐ हरकोदंडखंडनाय नमः
ॐ सप्ततालप्रभेत्रे नमः
ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः
ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः ३०

ॐ ताटकांतकाय नमः
ॐ वेदांतसाराय नमः
ॐ वेदात्मने नमः
ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः
ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः
ॐ त्रिमूर्तये नमः
ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ त्रिलोकत्मने नमः
ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः ४०

ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ दंडकारण्यवर्तनाय नमः
ॐ अहल्याशापविमोचनाय नमः
ॐ पितृभक्ताय नमः
ॐ वरप्रदाय नमः
ॐ जितेंद्रियाय नमः
ॐ जितक्रोधाय नमः
ॐ जितमित्राय नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः ५०

ॐ ऋक्षवानरसंघातिने नमः
ॐ चित्रकूट समाश्रयाय नमः
ॐ जयंतत्राण वरदाय नमः
ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः
ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः
ॐ मृतवानरजीवनाय नमः
ॐ मायामारीचहंत्रे नमः
ॐ महादेवाय नमः
ॐ महाभुजाय नमः
ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः ६०

ॐ सौम्याय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
ॐ महायोगिने नमः
ॐ महोदराय नमः
ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः
ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः
ॐ स्मृतसर्वाधनाशनायै नमः
ॐ आदिपुरुषाय नमः
ॐ परमपुरुषाय नमः ७०

ॐ महापुरुषाय नमः
ॐ पुण्योदयाय नमः
ॐ दयासाराय नमः
ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
ॐ स्मितभाषिणे नमः
ॐ मितभाषिणे नमः
ॐ पूर्वभाषिणे नमः
ॐ राघवाय नमः
ॐ अनंतगुणगंभीराय नमः
ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः ८०

ॐ मायामानुषचारित्राय नमः
ॐ महादेवादिपूजिताय नमः
ॐ सेतुकृते नमः
ॐ जितवाराशये नमः
ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ श्यामांगाय नमः
ॐ सुंदराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ पीतवाससे नमः ९०

ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः
ॐ यज्विने नमः
ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
ॐ शिवलिंगप्रतिष्ठात्रे नमः
ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ परब्रह्मणे नमः
ॐ सच्चिदानंदविग्रहाय नमः
ॐ परंज्योतिषे नमः १००

ॐ परंधाम्ने नमः
ॐ पराकाशाय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ परेशाय नमः
ॐ पारगाय नमः
ॐ पाराय नमः
ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः
ॐ परस्मै नमः १०८

॥ इति श्रीरामाष्टोत्तर शतनामावलि समाप्तम् ॥

धूप :

वनस्पत्युद्भवै र्दिव्यै - र्नानागंधै स्सुसंयुतः।
अघ्रेय स्सर्वदेवानां - धूपोयं प्रतिगृह्यतां।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीप :

ज्योतिषां पतये तुभ्यं - नमो रामाय वेधसे।
गृहाण दीपकं राजन - त्रैलोक्य तिमिरापहं।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य :

इदं दिव्यान्नममृतं रसैष्षड्भिः समन्वितं।
श्रीरामचन्द्र राजेन्द्र नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां।।
विधि प्रकारेण नैवेद्यं कुर्यात्।
मद्ये मद्ये पानीयं समर्पयामि। 'अमृतापिधानमसि'
उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।
पादौ प्रक्षालयामि। शुद्धाचमनीयं समर्पयामि।

तांबूल (सुपारी) :

नागवल्ली दलैर्युक्तं - पूगीफल समन्वितं।
तांबूलं गृह्यतां राम कर्पूरादि समन्वितं।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन :

मंगलं विश्वकल्याण - नीराजन मिदं हरे।
संगृहाण जगन्नाथ - रामभद्र नमोस्तुते।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः नीराजनं दर्शयामि।
नीराजानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प :

नमोदेवादिदेवाय - रघुनाथाय शारंगिणे।
चिन्मयानंद रूपाय - सीतायाः पतये नमः।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः
सुवर्ण दिव्य मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार :

यानिकानि च पापानि - जन्मांतरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यंति - प्रदक्षिण पदे पदे।।
पापोहं पापकर्माहं - पापात्मा पापसंभवः।
त्राहिमां कृपया देव - शरणागतवत्सला।।
अन्यथा शरणं नास्ति - त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन - रक्ष रक्ष रघूत्तमा।।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः आत्म प्रदक्षिण नमस्कार समर्पयामि।

पुष्पांजलि :

ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय
धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
श्री सीतारामचन्द्र परमात्मने नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।

उत्तरपूजा :

श्री जांबवत्सुग्रीव हनुमत् लक्ष्मण भरतशत्रुघ्न परिवार सहित श्री सीतारामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

छत्रं धारयामि - चामरं वीजयामि

गीतं श्रावयामि - नृत्यं दर्शयामि

आंदोलिकं आरोहयामि - अश्वं आरोहयामि गजमारोहयामि समस्त राजोपचार देव्योपचार भक्त्युपचार शक्त्युपचार पूजां समर्पयामि।

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या - तपःपूजा क्रियादिषु

न्यूनं संपूर्णतां याति - सद्योवन्दे तमच्युतम्।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं - भक्तिहीनं रघूत्तम।

यत्पूजितं मया रामा! परिपूर्णं तदस्तुते

अनया ध्यान-अवाहनादि पूजया

श्री सीतारामचन्द्र देवता सुप्रीता सुप्रसन्ना वरदा भवतु - (ऐसे कहकर अक्षत और पानी छोडना है)

सर्वं श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु।

सकल गुणाभिराम

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार भगवान श्रीराम का जन्म चैत्र मास शुक्ल पक्ष नवमी तिथि को हुआ था। यह दिन 'श्रीरामनवमी' अथवा 'राम जन्मोत्सव' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन मंदिरों में श्रीराम की विशेष पूजा की जाती है; भजन-कीर्तन आदि गाए जाते हैं। अब हम इस सुअवसर पर श्रीराम के उन गुणों के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। जिनके कारण श्रीराम 'सकलगुणाभिराम' कहलाए।

पारिवारिक संबंध और समर्पण :

पारिवारिक संबंधों को श्रीराम अत्यंत गौरव देते थे। बड़ों के प्रति आदर, छोटों के प्रति प्रेम भाव रखते थे। वे एक अच्छे पुत्र, भाई और पति के रूप में सबको आदर्शनीय रहे। वे कौशल्या के पुत्र होने पर भी सुमित्रा और कैकेई से अत्यंत प्रेम करते थे। तीनों माताओं का समान प्रेम उनको मिला था। कैकेई तो श्रीराम को भरत से भी ज्यादा प्यार करती थी। श्रीराम ने तीनों भाइयों को कभी भी अपने सगे भाई से कम नहीं माना। सबका समान रूप से खयाल रखते थे। इसी कारण से तीनों भाई राम की हर बात और काम का आदर करते थे। लक्ष्मण, श्रीराम के साथ वनवास केलिए वन को चले। श्रीराम ने अपने भाई भरत के लिए सिंहासन का भी त्याग दिया। भरत ने श्रीराम के बिना उस सिम्हासन को अपना नहीं माना। श्रीराम की चरण पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर राज्य को संभाला और चौदह वर्षों के बाद श्रीराम को राजभार वापस लौटा दिया। श्रीराम और उनके भाइयों का आपसी प्रेम पूरे संसार के लिए अनुकरणीय एवं आचरणीय है। श्रीराम पिता के प्रति अत्यंत सम्मान रखते थे। पिता के वचन की रक्षा के लिए ही उन्होंने वन गमन किया। तत्कालीन समाज में बहुपत्नित्व मान्य था। परन्तु उन्होंने एक पत्नीव्रत का पालन किया। श्रीराम अपनी पत्नी सीता से अत्यंत प्यार करते थे। इसीलिए वनवास के समय भी सीता देवी को बड़ी सतर्कता से देखभाल करते थे। सीतापहरण होने के बाद वे अनेक कष्टों को झेलते हुए रावण से युद्ध करके सीता माता को वापस ले आए। समाज में लोगों की शंकाओं को दूर कराने के लिए सीता माता का अग्नि प्रवेश करवाया और उनकी पातिव्रत्य को सिद्ध करवाया। आज की दुनिया में पारिवारिक संबंध टूटते जा रहे हैं। कोई किसी के प्रति गौरव या प्यार की भावना नहीं रखता। रामायण में राम ने जिन पारिवारिक संबंधों के मूल्य तथा समर्पण भाव को दिखाया, उनको अपनाने से एक स्वस्थ समाज का निर्माण

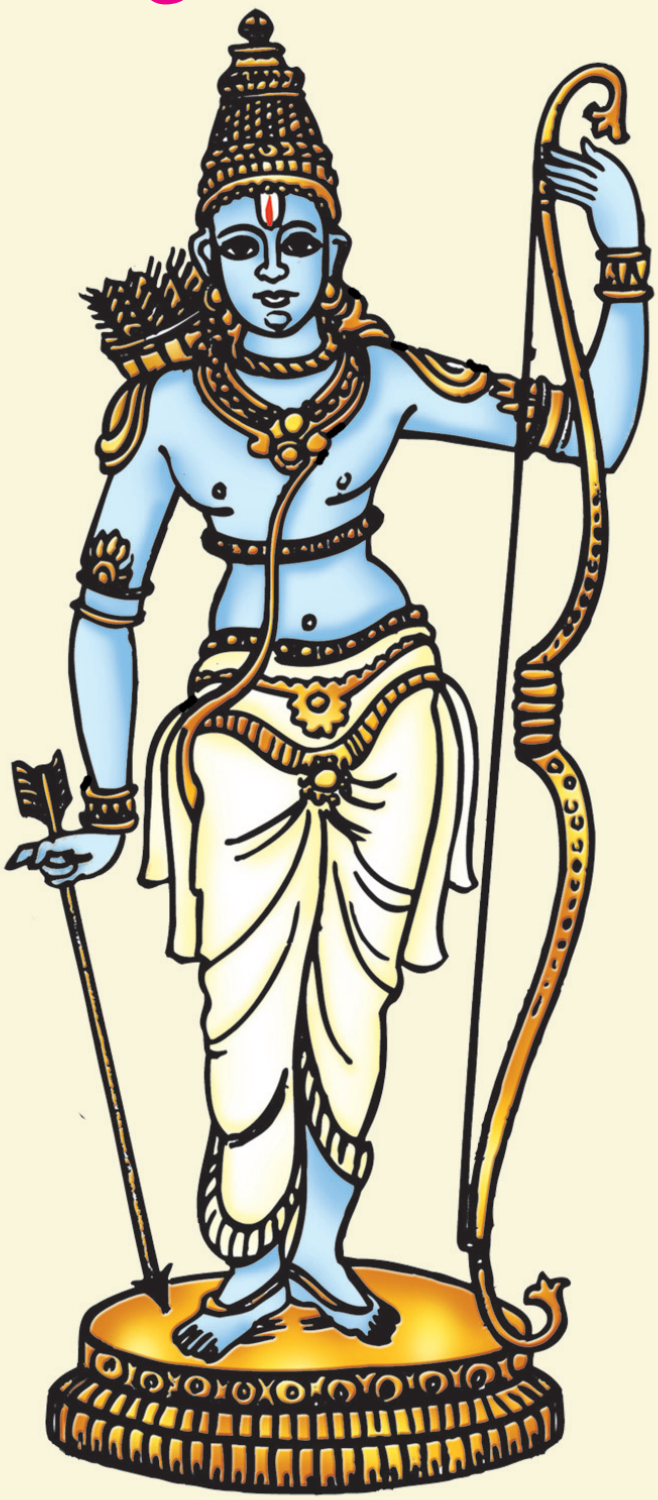

- डॉ.एच.एन.गौरी राव
मोबाइल - 9742582000

कर सकते हैं, क्योंकि परिवार ही समाज की छोटी एवं बलवती इकाई है।

संयम का पालन :

श्रीराम के श्रेष्ठ गुणों में संयम भी एक है। यह गुण उनका सहज स्वभाव था जिसको उनके जीवन के आरंभ से अंत तक देख सकते हैं। उनको जीवन में अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा, परंतु कभी भी संयम और धैर्य को नहीं खोया। उनके राज्याभिषेक के लिए अनेक तैयारियाँ हो रही थी, परंतु दूसरे दिन ही उनको चौदह सालों तक वनवास केलिए जाना पड़ा। तब उन्होंने संयम नहीं खोया। दु:खित नहीं हुए। अपने स्थिर चित्त को बनाये रखा। किसी को दोषी नहीं ठहराया। वे राजकुमार होने के नाते उनके पास अनेक सुख-सुविधाएँ थीं पर सबकुछ त्याग कर वनवास के लिए तैयार हो गए, जो आसान काम नहीं था। इस वनवास के दौरान पत्नी सीता का अपहरण हुआ तो वे हिम्मत से संयम के साथ सीता को खोजने निकले; उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक पैदल मार्ग पर ही चले। उनको मालूम होने पर कि रावण ने सीता का अपहरण किया है, लंका जाने के लिए उन्होंने पहले समुद्र से रास्ता देने की प्रार्थना की। तीन दिनों तक प्रतीक्षा की। उसके बाद ही उन्होंने समुद्र पर ब्रह्मास्त्र चढ़ाने को तैयार हो गये। तब भयभीत समुद्रदेव ने प्रत्यक्ष होकर उनसे क्षमा मांगी और समुद्र पर सेतु बंधन का सुझाव दिया। श्रीराम ने समुद्र को क्षमा करते हुए ब्रह्मास्त्र को द्रुमकुल्य की ओर छोडा। इतना ही नहीं, यह जानते हुए कि सीता का अपहरण रावण ने किया है, उन्होंने एकाएक रावण पर युद्ध नहीं किया। वे जानते थे कि इस युद्ध में दोनों ओर के अनेक लोग मर जाएंगे। इससे उन्होंने अंगद को दूत के रूप में भेजा। जब रावण ने नहीं माना, उसके बाद ही उन्होंने युद्ध किया। जीवन की किसी भी विषम परिस्थिति में श्रीराम के चेहरे पर क्रोध की रेखा नहीं दिखाई पड़ती। वे जानते थे कि 'क्रोध' काम को बिगाड़ता है। स्थिरचित्त से वे परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद समय के अनुकूल निर्णय लेते थे। अगर क्रोध करते तो वह केवल किसी के अधर्म पर या अहंकार पर करते थे। राम का संयम और शांत स्वभाव ही एक अस्त्र था, जिसने अनेक कष्टों को सामना करने की शक्ति दी थी। आज के जमाने में लोगों को छोटे-छोटे कष्टों को भी सहन करने की शक्ति नहीं है। इससे सब आसान से क्रोधित हो जाते है। इस क्रोध से काम बिगड़ जाता है, बनता नहीं। इससे श्रीराम ने जिस संयम को जीवन पर्यंत निभाया, उस संयम को हमें जरूर सीखना चाहिए।

सक्षम नायक :

श्रीरामचंद्र एक सक्षम नायक थे। अधर्म को मिटाने और शोषितों की रक्षा के लिए वे एक नायक के रूप में दिखाई पड़ते हैं। एक नायक का गुण होता है निस्वार्थ। वन गमन से पहले इस निस्वार्थ बुद्धि से अपने राज्य को भाई के लिए त्याग दिया। श्रीराम राजा होने से पहले ही अपने नायकत्व गुणों से नगरवासियों को सुपरिचित थे। इससे राम वनगमन करते समय दूर तक नगरवासी उनके साथ चलते हैं। श्रीराम के मना करने पर ही वे वापस नगर लौटते हैं। नायक का एक और गुण होता है सत्यासत्य को परखने का विचक्षण ज्ञान और स्थिरचित्त से निर्णय लेने की क्षमता। वाली वध के समय भी वाली अधर्मी होने से राम ने उनको मारा। शरणागत विभीषण की मित्रता को वानर नायकों के समेत सब तिरस्कार करने पर भी श्रीराम ने उसको अपना मित्र माना। बाद में सभी लोग इससे सहमत हुए। यही निर्णय आगे चलकर कल्याणकारी सिद्ध हुआ कि वे युद्ध को जीते। वे कुशल प्रबंधक भी थे। हनुमान को बुद्धि बल को और धैर्य को जानते थे। इसीलिए उन्होंने सीतान्वेषण के समय हनुमान को दक्षिणी दिशा की ओर भेजा और अंगद को युद्ध के समय एक दूत के रूप में रावण के पास भेजा। नल और नील को सेतु बांधने के अधिकार को सौंपा। सभी को अपनी-अपनी क्षमता के आधार पर विकास होने का अवसर देते थे। श्रीराम का एक और दिव्य गुण यह था कि वे किसी से नफरत नहीं

करते थे; चाहे वह अपना शत्रु क्यों न हो। वे रावण के अधर्म को नहीं मानते थे, पर उनकी प्रतिभा के प्रति गौरव रखते थे। वे जानते थे कि रावण ब्रह्मज्ञानी है, सकल विद्या पारंगत है और वीर है। मरणासन्न रावण के पास श्रीराम, लक्ष्मण को भेजते हैं ताकि वह उनसे सीख ले। वे अधिकार के लिए कभी भी स्वार्थी नहीं बने। वाली के वध के पश्चात सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाया। रावण वध के बाद लंका अत्यंत सुंदर, स्वर्णमय और संपत्र होने पर भी विभीषण को राजा बनाकर अयोध्या वापस लौटे। आज के राजनीतिज्ञ इस निस्वार्थ सेवा को रामजी से सीखना चाहिए, जो हर पल जनता के कल्याण की चिंता करते थे। महात्मा गांधी जी स्वतंत्र्योत्तर भारत को रामराज्य बनाना चाहते थे।

विनम्रता :

श्रीराम को मानव से दैवत्व प्राप्त करानेवाले गुणों में विनम्रता एक है। साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का संगम श्रीराम में है, जिससे वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। वे हमेशा अपने पिता के सामने बड़ी विनम्रता से व्यवहार करते थे। पिता के वचनपालक के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे अपनी विनम्रता के कारण परशुराम की क्रोधाग्नि को शांत किये थे। वनवास के दौरान उन्होंने अनेक ऋषि-मुनियों की बड़ी विनम्रता पूर्वक सेवा की और उनसे विद्या और आशीर्वाद प्राप्त किए। इसी विनम्रता से उन्हें हर जगह सफलता मिली।

जाति पांति से परे है श्रीराम की मित्रता :

दयालु श्रीरामचंद्र समाज में उच्च लोगों से ही नहीं निम्न कोटि के लोगों, जंगल जातियों से समान रूप से मित्रता बढाते थे। वे पूर्वाभाषी और मधुर भाषी थे। उनमें अहंकार नहीं था और उनकी मित्रता भी निस्वार्थ पूर्ण होती थी। एक बार किसी से मित्रता बढ़ाने पर हालत जो भी हो, सहायता करते थे। अगर वे चाहते थे तो रावण के मित्र वाली से स्नेह बढ़ाकर सीता माता को वापस मंगवा सकते थे। परंतु उन्होंने अधर्मी वाली से स्नेह नहीं बढाया। बल्कि उनसे वंचित सुग्रीव से स्नेह बढाकर वाली का वध कर किष्किंधा को दिलाया। अगर वे चाहते थे तो अन्य किसी शक्तिशाली राजाओं की सहायता लेकर लंका पर आक्रमण कर सकते थे। परंतु उन्होंने वानर जातियों तथा अन्य जंगली जातियों के साथ स्नेह बढ़ाकर लंका पर आक्रमण किया। ताकि जंगली जातियों का विकास हो सके। इसी तरह वे अपनी शरण में आए रावण के भ्राता विभीषण से स्नेह बढ़ाकर उनको लंका राज्य दिलाया। दूसरी ओर गंगा नदी पार करते समय वे निषादराज गुह से स्नेह किया। जिसने श्रीराम को माता सीता और लक्ष्मण के साथ अपने नाव में बिठाकर गंगा पार करवाया था। लंका से अयोध्या वापस जाते समय निषाद राजा के यहाँ जाकर अपनी कृतज्ञता जताई। उसी प्रकार भील जाति की शबरी से दिया गया झूठे बेर फल खाकर केवल शबरी का ही नहीं भील जाति का ही उद्धार किया। श्रीराम जाति, वर्ग से परे थे। मनुष्य हो या वानर, मानव हो या दानव सभी को साथ लेकर चलते थे। इन सबके स्नेह द्वारा उन्होंने सामाजिक समरस्ता का संदेश दिया।

प्रकृति और प्राणियों के प्रति प्रेम :

प्रकृति और प्राणियों से प्यार करना हमें श्रीराम से प्रेरणा लेनी चाहिए। वनवास के दौरान प्रकृति के सौंदर्य को तथा पशु पक्षियों को निकट से देखकर श्रीराम का मन आनंद से नाचता था। सब बंधुओं से दूर होने के दुःखों को इस प्रकृति के बीच रहकर भूल जाते थे। सीता माता तो महीसुता ही थी। वनवास काल में नदियाँ, पेड़, पहाड़ और वन्य प्राणी सभी सीता माता एवं श्रीराम को अपनी-अपनी तरीके से सहायता की है। चौदह साल के बाद अयोध्या वापस आकर उन्होंने प्रकृति की रमणीयता को प्राथमिकता दी।

श्रीराम और सीता माता दोनों सब प्राणियों के प्रति करुणा और दया दिखाते थे। प्रकृति और पशुओं से वे

इस प्रकार का संबंध रखते थे मानो वे उनके परिवार के सदस्य हो। सीता माता वनवास में हिरणों को हरी घास खिलाती हुई दिखाई पड़ती हैं। सीतान्वेषण के समय श्रीराम ने पितृसमान जटायु का दहन संस्कार करके उसको सद्गति प्राप्त करवाके अपना आभार प्रकट किया। क्योंकि सबसे पहले जटायु ने ही श्रीराम को सीता के अपहरण के बारे में बताया और रावण से लड़ते-लड़ते घायल होकर मर चुका था। सेतुबंध के निर्माण के वक्त उस कार्य में सहायता करने वाले गिलहरियों पर अपना प्यार दिखाया।

पारिवारिक संबंध, प्यार, दया, मर्यादा, मित्रता, राज्य पालन में नैतिकता और समरसता आदि में जिन मूल्यों को श्रीराम ने प्रस्तुत किया, हम सब को उनका पालन करना चाहिए। वही श्रीराम की सच्ची आराधना है। उन गुणों के कारण ही वे आज भी पूजित हैं और सकल गुणाभिराम कहलाए। इन सद्गुणों को अपनाने से हम जीवन में मुश्किलों का सामना करना सीखेंगे। ऐसे सद्गुण ही किसी भी मनुष्य को असाधारण बनाते हैं। मारीच कहता है 'रामो विग्रहवान् धर्मः।' अर्थात भगवान श्रीराम धर्म के मूर्त स्वरूप है। अन्य विष्णु के अवतारों से भिन्न श्रीराम ने इस अवतार में मनुष्य का रूप धारण करके एक आम आदमी के सब मुश्किलों को झेला। उन्होंने कहीं भी देवता सदृश्य चमत्कार नहीं दिखाया, बल्कि मुश्किलों को सामना करने की रीति को दिखाया। हर एक काम में उन्होंने एक नया आदर्श स्थापित किया।

वाली वध :

कहा जाता है कि श्रीराम ने वाली को छल से मारा था। परंतु यह सच नहीं। क्योंकि वाली एक अधर्मी था। उसने अपने भाई सुग्रीव को राजपद से हटाकर उनकी पत्नी से बलपूर्वक विवाह किया था। इससे धर्म परिरक्षणार्थ श्रीराम ने वाली का वध किया। यह उसका कर्तव्य था और उसने क्षत्रिय धर्म का पालन किया। वाली से युद्ध करने से पहले सुग्रीव ने श्रीराम की बल परीक्षा ली थी, क्योंकि इस बल परीक्षा में जीतनेवाला ही वाली का वध कर सकता है। दूसरी बात यह है कि श्रीराम ने वाली को न्याय के मार्ग पर ही मारा था। एक ओर सुग्रीव युद्ध में घायल पड़ा था और दूसरी ओर वाली अपनी सेना के साथ युद्ध कर रहा था। उस कानन में रामजी के पास रक्षात्मक कवच कुछ भी नहीं थे। इस की वजह से श्रीराम ने वृक्ष के पीछे छिपकर रक्षात्मक रीति से युद्ध करके, युद्ध के नियमों का पालन करते हुए, सुग्रीव को बचाने वाली का वध किया था और सुग्रीव को राजपद दिलाया था।

राम नाम महिमा :

राम नाम की महिमा अपार है। इस तारक मंत्र को जपने से हरि-हर दोनों की शक्ति मिलती है। रामायण में राम नाम के महत्व के दृष्टांत मिलते हैं - श्रीराम लंका पर आक्रमण करने के लिए नल और नील के सारथ्य में पुल का निर्माण करवाना था। सब वानर 'श्रीराम' नामांकित पत्थरों को समुद्र में डालने लगे; तो वे पत्थर पानी में तैरते तो रहे। किंतु एक जुट नहीं होते थे। यह सब देख रहे श्रीराम ने स्वयं एक पत्थर को पानी में डाला, तो वह डूब गया। आश्चर्यचकित राम से नील कहते हैं कि स्वयं राम से ज्यादा राम नाम महान है। एक और दृष्टांत राम हनुमान युद्ध के समय मिलता है। नारदजी की हरकत से हनुमानजी ने भरी सभा में विश्वामित्र ऋषि को अभिवादन नहीं किया था। इससे क्रुद्ध होकर विश्वामित्र ऋषि ने हनुमान से युद्ध करने को राम से कहा था। यह जानकर हनुमान एकांत स्थल में जाकर राम नाम जपने में लीन हो गए। श्रीराम वहाँ आकर हनुमान पर बाणों से मारने पर भी हनुमान के बाल को बांका न कर सके। राम नाम के आगे राम के बाण भी विफल हो गए। राम नाम के महत्व के बारे में भगवान शिव माता पार्वतीजी से कहते हैं -

''श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।''

अर्थात राम! राम! राम! इस प्रकार तीन बार जप करना विष्णु सहस्त्रनाम जपने के समान है। स्वयं शिव जी इस राम नाम जपने में रमण करते हैं।

वीर हनुमान :

वाल्मीकि रामायण में हनुमान एक महान वीर है। जब से ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान का भेंट श्रीराम से होती है, तब से वे इतने घनिष्ठ मित्र बन गये कि हनुमान के बिना श्रीराम की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हनुमान महान वीर होने पर भी श्रीराम के चरणों के सामने प्रणाम करते हुए दिखाई पड़ते हैं। यह उनकी श्रीराम के प्रति विनम्रता तथा स्वामी भक्ति को दर्शाती है। वे महान ज्ञानी थे; स्वामी कार्य करने में दक्ष और महाबली थे। श्रीराम के हर एक प्रसंग में हनुमान को देख सकते हैं। श्रीराम भी हनुमान को अपना प्रिय भाई मानते थे। वे श्रीराम के इतने परम भक्त थे कि सीता माँ और रामजी दोनों को अपने हृदय में बसाये। एक बार कैवर्त देश के राजा सुकंत के प्रसंग में श्रीराम को हनुमान से युद्ध करना पडा। राजा सुकंत की रक्षा के लिए हनुमान ने श्रीराम का सौगंध खाया था। हनुमान जी ने सुकंत को राम नाम मंत्र के घेरे में बिठा दिया। इसके बाद राम नाम जपने लगे। इस युद्ध में उन पर चढ़ाये गये राम के बाण विफल होने लगे; वे बाण राम नाम के आवरण को नहीं भेद सके। इससे लक्ष्मण कुपित होकर हनुमान को बाणों से मारने लगे, तो श्रीराम घायल होकर मूर्छित हो गये। तब लक्ष्मण ने देखा कि हनुमान के हृदय में श्रीराम बसे हैं। हनुमान अपने प्रभु श्रीराम पर अस्त्र से युद्ध नहीं करते थे; बल्कि श्रीराम नाम को ही अपनी रक्षा कवच बनाते थे। आज भी मंदिरों में या चित्रों में राम के पास हमेशा हनुमान रहते हैं।

भद्राचलम में राम उत्सव :

श्रीरामनवमी पूरे भारत में सभी राम मंदिरों में धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। नौ दिनों तक मनाए जानेवाले यह त्यौहार महाराष्ट्र में 'चैत्र नवरात्रि'; आंध्रप्रदेश में 'वसंतोत्सव' कहा जाता है। भद्राचलम में भक्त रामदास से निर्मित राम मंदिर में हर साल आडंबरता से नौ दिनों तक उत्सव का आचरण विधि विधान के साथ किया जाता है। इस दिन भद्राचलम में सीताराम कल्याणोत्सव को जिस वैभवता के साथ मनाया जाता है उतना वैभव और किसी मंदिर में देखने को नहीं मिलता। श्रद्धालु इस दिन बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ भाग लेते हैं। सुबह सूर्य की प्रार्थना से उत्सव का आरंभ होता है। कल्याण के लिए हरियाली मडंप का निर्माण किया जाता हैं। उसको अनेक प्रकार के फूलों से अलंकृत किया जाता है। भक्तों से भरा यह मंडप बड़े शोभायमान दिखाई पड़ता है। चारों ओर तारक मंत्र से गूंज उठता है। तेलंगाना सरकार की ओर से रेशम के वस्त्रों तथा मोतियों के अक्षतों को लाकर भगवान जी को समर्पित करते हैं। कल्याणोत्सव के बाद उत्सवमूर्तियों की शोभायात्रा निकाली जाती है। दूर-दूर से लाखों संख्या में भक्त उल्लास के साथ इस उत्सव में भाग लेते हैं। वसंतोत्सव के दौरान भक्त एक दूसरे पर रंगों से मिश्रित पानी को फेंकते है। मंदिर भी विशेष रूप से सजाया जाता हैं। विद्युत दीपों का अलंकार किया जाता है। श्रीराम के साथ सीता माता, लक्ष्मण जी और हनुमान जी की भी विशेष पूजा और अलंकार किए जाते हैं। छोटे-बड़े सब इस उत्सव में भाग लेते हैं। डोलोत्सव और वसंतोत्सव के बाद अन्न प्रसाद वितरित किया जाता है। राम के भजन तथा कीर्तन गाए जाते हैं; सत्संग का आयोजन भी होता है।

घरों में भी सुबह स्नानादि के बाद शुद्ध होकर भगवान रामजी की पूजा की जाती है। गुड से तैयार किया गया शरबत तथा कच्चे दाल को भगवान को समर्पित किया जाता है। कुछ लोग इस दिन उपवास रखते हैं। घर में पूजा के बाद मंदिर में भगवान के दर्शन करने जाते हैं। बाद में रामायण का पारायण किया जाता है।

15. सनक - सनंदन तीर्थम्

आत्मा की मुक्ति के लिए योग मार्ग को अपनाकर चलने से अनेक कष्ट सामने उभरते हैं। उनको पार करना महान तपस्वियों के लिए भी कठिन होता है। कठिनाइयों को पार करने के मार्ग के बारे में जब पूछा गया तो उन्हें सनक-सनंदन तीर्थ में पवित्र स्नान करने की सलाह मिली थी। यह तीर्थ पापनाशनम् तीर्थ की उत्तरी दिशा में चार मील की दूरी पर है। यह सिद्ध और योगियों का स्थान माना जाता है। यह सामान्य मानव की मांसल दृष्टि से परे ही रहता है। अर्थात् कोई भी व्यक्ति अपनी चर्मचक्षुओं से इसे देख नहीं सकता। जो योग साधना करना चाहता है उसे पहले स्वामिपुष्करिणी में मार्गशीश मास (धनुर्मास, दिसंबर - जनवरी) के शुक्ल द्वादशी की तिथि को पवित्र स्नान करना है। इस मास को धनुर्मास भी कहते हैं। ''मुक्कोटि द्वादशी'' के दिन समर्पित भाव से इस तीर्थ में स्नान कर, तेरहवें दिन से पवित्र शरीर और मन से श्री वेंकटेश्वर का अष्टाक्षरा मंत्र जप के साथ योग साधना आरंभ करनी होती है। उसे अविघ्न करनी होती है। इससे निस्संदेह साधना पूर्ण रूपेण संपन्न होगी। (वरा. पु. भाग - 1, अ. 28, श्लो. 31 - 36)।

16. कायरसायन तीर्थम् या अस्ति - सरस तीर्थम्

यह तीर्थ सनक - सनंदन तीर्थ के ऊपर है। यह भी अगोचर है। इस तीर्थ का जल पान शरीर को तुरंत स्वच्छ और स्वस्थ बनाता है। इसकी शक्ति की परीक्षा के लिए अगर पका पीले रंग का पत्ता इसके जल प्रवाह में डालेंगे तो तुरंत वह पत्ता हरित हो जाता है। पानी पर तिरता प्रवाहित हो जाता है। लेकिन इस तीर्थ का मुखस्थान सनक - सनंद के द्वारा ढक दिया गया है। इसीलिए इसका स्रोत मानव दृष्टि से परे है। फिर भी महात्मा लोग भगवान की कृपा हो तो इसका दर्शन पा सकते हैं। भगवान वेंकटेश्वर का स्मरण करते हुए अपने मन और शरीर को दृढ रखकर उनकी सेवा में अपने को समर्पित करनेवाले लोग सही भक्त रहेंगे। हरि (विष्णु) शेष हैं तो मानव शेषी हैं। अतः मनुष्य को नित भगवान का स्मरण करना होता है। उपयुक्त धार्मिक कार्य निभाने पडते हैं। शास्त्रानुमोदित कर्मों के द्वारा ही मनुष्य मुक्ति पा सकता है। मानव को शरीर, सुख, ज्ञान, शक्ति, भूमि, गृह, संपत्ति आदि भगवान वेंकटेश्वर की कृपा से ही प्राप्त होते हैं। मानव को समझना चाहिए कि सारी भौतिक विभूतियाँ नष्ट होनेवाली हैं। पाप कृत्य हमें दुखों की ओर ले जाते हैं। पुण्य कर्म हमें स्वर्ग प्राप्ति के प्रशस्त मार्ग पर ले

जाते हैं। भगवान ही सभी कर्मों के प्रेरक हैं। उन्हीं पर मनुष्य को अपनी दृष्टि केन्द्रित करनी है। धर्म सूत्रों द्वारा निर्देशित मार्गों पर चलने की इच्छा रखकर आगे बढना मानव का कर्तव्य है। इसका मार्ग दर्शन सद्गुरु द्वारा ही सुलभ है। सद्गुरु से हमेशा, सब कालों में, सब दशाओं में वेद-वेदांत मार्गों को हमें पाना है। उपयुक्त रीति से स्वीकारना भी हमारा कर्तव्य होता है। संक्षेप में कहा जाय तो मानव को अपने जीवन काल में निषेधित कार्यों से दूर रहना होता है और निर्देशित पंथ को अपनाना होता है तथा परिशुद्ध जीवन बिताना होता है। (वरा. पु. भाग - 1, अ. 28, श्लो. 37 - 49)।

तुंबुरु तीर्थ में ही श्री वेंकटेश्वर ने राजा तोंडमान को एक ब्राह्मण की पत्नी के पार्थिव शरीर को डुबो देने का आदेश दिया था। एक ब्राह्मण राजा तोंडमान की देखरेख में अपनी पत्नी को सौंपकर वारणासी (बनारस, काशी) की यात्रा पर गया था। उस समय ब्राह्मण की पत्नी गर्भवती थी। जब ब्राह्मण काशी यात्रा से लौटा तब राजा ने पाया कि ब्राह्मण की पत्नी मर चुकी है। राजा ने कुछ अनदेखी दिखायी थी। इस तीर्थ में भगवान के आदेश से शव को डुबाने से ब्राह्मण की पत्नी पुनर्जीवित हो गयी। यह वृत्तांत इस तीर्थ की महिमा को उद्घोषित करता है। (पृष्ठ. 85 - 86)।

17. देव तीर्थम्

यह तीर्थ एक तालाब है। मंदिर की वायुव्य दिशा में घने जंगल में यह तीर्थ स्थित है। इसमें एक पवित्र स्नान करने से मानव को दीर्घायु और सुख संपत्तियाँ मिलती हैं। विशेषकर पुष्या नक्षत्र में व्यातिपात - योग के समय पर अथवा श्रवणा नक्षत्र युक्त सोमवार का दिन अधिक प्रशस्त माना जाता है। इस समय पर स्नान करे, भक्त को निश्चित स्वर्ग की प्राप्ति होती है। (वरा. पु. भाग - 2, अ. 1, श्लो. 74 - 80)।

क्रमशः

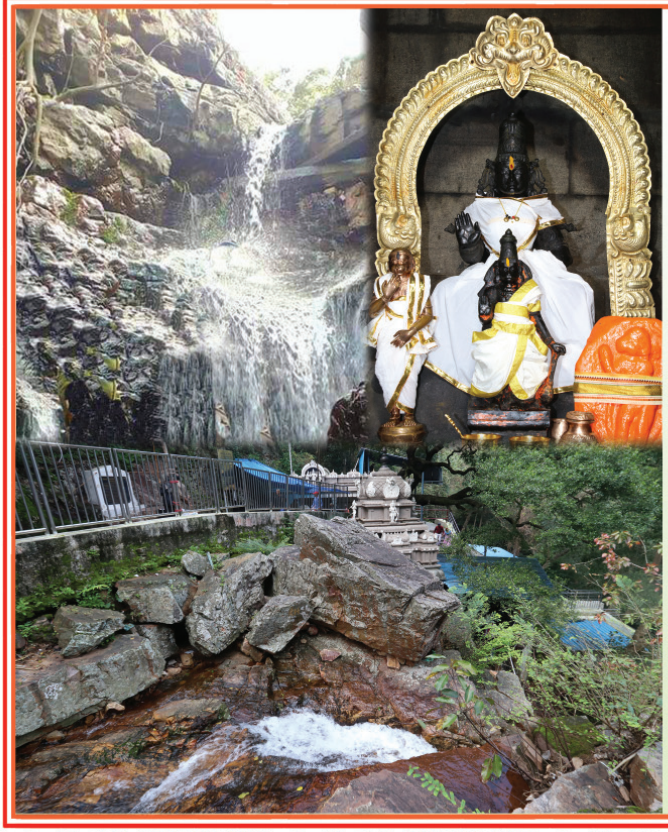

आकाशगंगा

अंजनाद्रि ही हनुमान जी का जन्म स्थान

तिरुमल के पुण्य तीर्थों में आकाशगंगा भी एक है। श्री बालाजी के मंदिर से 5 कि.मी. की दूरी पर यह स्थित है। भक्तजन पैदल मार्ग से सीढियाँ उतरकर आकाशगंगा तीर्थ में पहुँच सकते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार यहाँ अंजनादेवी ने तपस्या करके, हनुमान(आंजनेय) को पुत्र के रूप में प्राप्त किया था। श्री बालाजी को तीर्थ कैंकर्य समर्पित करने के लिए वैष्णवाचार्य तिरुमलनंबि ने प्रति दिन कई प्रयास करके पापविनाशनम तीर्थ से पानी लाया करता था। अपने प्रिय भक्त, तिरुमलनंबि के कठोर वृथा प्रयास को हटाने के लिए स्वयं भगवान ही भील के रूप में परीक्षा लेते समय इसकी आकाशगंगा जलधारा की सृष्टि की थी। आकाशगंगा के समीप श्री अंजनादेवी और श्री बालांजनेयस्वामीजी के मंदिर स्थित हैं। इस प्रांत तक पहुँचने के लिए तिरुमल से आर.टी.सी. बसें चलती हैं।

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(31वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

श्रीगोविन्दाचार्य का संन्यास ग्रहण

गुरुदेव को चरणारविन्दों की सेवा ही भगवत्सेवा तुल्य मानने वाले श्री गोविन्दाचार्यजी श्री शैलपूर्ण स्वामीजी का स्मरण करके, उनके समान ही श्री रामानुजाचार्य में श्रद्धा रखते हुए अनन्यभाव से उनकी अहर्निश सेवा करने लगे। गोविन्दाचार्यजी की यह कैंकर्य परायणता देखकर वहाँ के सभी वैष्णववृन्द उनकी प्रशंसा करने लगे, जिसे सुनकर गोविन्दाचार्यजी ने अपनी प्रशंसा का समर्थन करते हुए कहा- ''मैं अवश्य ही प्रशंसा का पात्र हूँ।''

श्री गोविन्दाचार्य की यह आत्म प्रशंसा सुनकर अकारणकरुणा-वरुणालय श्री रामानुजाचार्य दयार्द्र होकर उनसे बोले- ''गोविन्द! आपकी सौजन्यता से सभी वैष्णव आपकी प्रशंसा करते हैं, किन्तु आपको स्वयं आत्मश्लाधी नहीं बनना चाहिए, ऐसी अवस्था में आपको नैच्यानुसन्धान करना चाहिये था। श्री रामानुजाचार्यजी की बातें सुनकर श्री गोविन्द बोले- ''गुरुदेव! चौरासी लाख योनियों में घूमता हुआ जीव घुणाक्षर न्याय से मानव शरीर पाता है, किन्तु यहाँ भी प्रायः पथभ्रष्ट ही हो जाता हैं। मैं भी पहले कालहस्ति नामक ग्राम में जटाजूटधारी बनकर, भस्म शरीर में पोतकर आचरणहीन बन गया था। जल में मिले दूध की तरह अपने अस्तित्व को खो देने के कारण मेरा उद्धार होना असम्भव था किन्तु आपने कृपा करके मुझे बचा लिया और मुझे शुद्ध बनाया। अब मैं श्रीवैष्णव बनकर आपकी सेवा कर रहा हूँ। चूँकि आपकी देव-दुर्लभ कृपा मुझ पर हुई है अतः मैं अपने को धन्य मानता हूँ और अपनी प्रशंसा करता हूँ। यह मेरी नही आपकी प्रशंसा है।'' गोविन्द की यह भावना देखकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें अपने गले से लगा लिया।

एक दिन नित्यकर्म से रहित श्री गोविन्दाचार्य को सूर्योदय से पूर्व ही बिना तिलक आदि लगाये वेश्या के द्वार पर बैठे हुए देखकर श्रीवैष्णवों ने उनकी शिकायत श्री रामानुजाचार्य के यहाँ की, जिसे सुनकर श्री

रामानुजाचार्य ने श्री गोविन्द को बुलाकर इसका कारण पूछा तो उन्होंने बतलाया कि वेश्या के यहाँ बड़े सबेरे ही श्री यतिराज के भक्त गायक आया करते हैं और उसे ही सुनने के लिये वे वहाँ जाया करते है गुरु के गुणानुवाद श्रवण में गोविन्द की अनन्य निष्ठा देखकर श्री यतिराज बहुत प्रसन्न हुए और गोविन्दाचार्य भी उनकी मनसा-वाचा-कर्मणा सेवा करते हुए उनकी सन्निधि में सुख पूर्वक रहने लगे।

एक बार श्री गोविन्दाचार्यजी की माँ जाकर उनसे कहने लगी की तुम्हारी पत्नी ऋतुमती हुई है, अतः तुम घर चलो, किन्तु यतिराज की सेवा में संलग्न गोविन्द ने उदासीनता प्रकट की जिसे देखकर उनकी माँ ने श्री यतिराज के यहाँ आकर उपर्युक्त बातें बतायीं। तदनन्तर श्री गोविन्दाचार्यजी को बुलाकर यतिराज बोले कि शास्त्रों की आज्ञा है कि मनुष्य को आश्रम के धर्मों का पालन करना चाहिये अतः आप जाकर अपनी स्त्री के साथ रात्रि के अन्धकार में एकान्त में निवास करें। श्री गोविन्दाचार्यजी गुरुदेव की आज्ञा पाकर घर आये और रात्रि भर पत्नी के साथ ज्ञान वैराग्य की बातें करते रहे। प्रातःकाल में पुत्रवधू से सारा वृत्तान्त सुनकर उनकी माता ने पूछा- ''गोविन्द! तुम विद्वान् हो, क्या तुम्हें ऐसा करना चाहिये?'' माता के उत्तर देते हुए गोविन्दाचार्यजी बोले- ''अन्तर्यामी भगवान के प्रकाश से रात्रि भर अन्धकार का नामो-निशान न रहा। गुरुदेव की कृपा के कारण अब मेरे हृदय में षड्विकारों के लिए स्थान नहीं रहा।'' गोविन्दाचार्यजी की उपर्युक्त वाणी सुनकर उनकी माता ने दुःखी होकर यतिराज से सब कुछ निवेदन कर दिया। इसके बाद श्री गोविन्दाचार्यजी को बुलाकर श्री रामानुजाचार्य ने पूछा तो उन्होंने कहा- ''श्रीमन्! आपने कहा था कि एकान्त में स्त्री का सेवन करना चाहिये। किन्तु अन्तर्यामी भगवान के प्रकाश में मुझे कहीं अन्धकार दिखायी ही नहीं पड़ा।'' तदनन्तर श्री रामानुजाचार्यजी बोले कि- ''मानव को आश्रम धर्मों का पालन करना चाहिये, अनाश्रमी पतित हो जाता है, यह शास्त्रों का निर्णय है। विद्वान को गृहस्थ धर्मोपयोगी भोग्य वस्तुओं में भोग्यता बुद्धि न करके उसमें भगवत् कैंकर्य बुद्धि करना चाहिये। यदि आपको इन गृहस्थ आश्रम के धर्मों से विरक्ति हो गयी है तो आपको शीघ्र ही संन्यास ले लेना चाहिये।

गुरुदेव श्री रामानुजाचार्य की उपर्युक्त वाणी सुनकर श्री गोविन्दाचार्य जी उनसे संन्यास देने के लिये प्रार्थना करने लगे। श्री गोविन्दाचार्यजी की संन्यासाश्रम में निष्ठा देखकर उन्होंने उन्हें संन्यासाश्रम में दीक्षित किया तथा उनको मन्नाथ नाम से विभूषित किया। अपना मन्नाथ नाम सुनकर गोविन्दाचार्य अपने को इस नाम के योग्य न मानकर कहने लगे कि- भगवन्! यह संज्ञा तो आपके ही लिए उपर्युक्त है, क्योंकि आप लोकनाथ प्रभृति आचार्यों के आचार्य है। जिस तरह मन्नाथ की संज्ञा पाने से विद्वान् ''यज्ञमूर्ति'' की हानि हुई उसी तरह मेरी भी हानि होने की संभावना है। दूसरी बात यह है कि कभी भी गुरु और शिष्य का नाम एक नहीं होता।

श्री गोविन्दाचार्यजी की उपर्युक्त प्रार्थना सुनकर श्री रामानुजाचार्य ने उन्हें एम्बार की संज्ञा प्रदान की, जो मन्नाथ का ही पर्याय है। इसके बाद श्री गोविन्दाचार्य 'एम्बार' के ही नाम से प्रसिद्ध हो गये।

।।श्रीप्रपन्नामृत का 31वाँ अध्याय समाप्त हुआ।।

क्रमशः

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन.सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

सलम कोण्डु किळर्न्दु एळुलन्द तण् मुगिल्काळ् मावलियै
निलम् कोण्डान् वेंगटत्ते निरन्दु एरिप् पोळिवीर्काळ्
उलंगु उण्ड विळांगनि पोल् उळ् मेलियप् पुगुन्दु एन्नै
नलम्कोण् नारणर्क्कु एन् नडलै नोय् सेप्पुमिने। (582)

कठिन शब्दार्थ - सलम-जल, मुगिल-बादल, पोळिवीर्-बरसना, उलंगु-मच्छर, विळंगनि-बेल का फल, मेलिय-कमजोर, नडलै नोय-वियोग व्यथा।

भावार्थ - गोदा अपने प्रिय श्री विष्णु से मिलने वेंकटगिरि आयी है। लंबे समय के बाद भी उसे उसके प्रिय का दर्शन नहीं मिला। इससे वह एकदम दुखित हो जाती है। अपने प्रिय के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण उसका शरीर भी कमजोर हो गया है। वह अपनी दशा को अपने प्रिय को सुनाने के लिए काले बादल को दूत बनाकर भेजती है। वह बडे दुःख से काले बादल को देखकर कहती है, ''पानी भरकर ऊपर उठते ठंडे बादल! अपने प्रथम चरण से धरती को, दूसरे चरण से आकाश को और तीसरे चरण से राजा महाबलि के सिर को अपना लिए। भगवान विष्णु के वेंकटगिरि पर क्रम से चढकर तुम वर्षा देते हो। बेल के फल पर बैठता मच्छर उसके अन्दर के रस को चूस लेता है। वैसे ही भगवान विष्णु पर का मेरा प्रेम मेरे शरीर के अन्दर घुसकर मुझे दुःख देकर कमजोर कर दिया है।

इस प्रकार मेरा मन उस पर लग जाने के कारण बनी मेरी स्थिति का कारण वही है। इसलिए यदि तुम उनको देखोगे तो जरा बताना कि मैं वियोग व्यथा में कितनी बडी वेदना से दिन बिता रही हूँ।''

मतलब यह है कि गोदा अपने प्रिय से मिलने के लिए तडप उठती है। उसके वियोग से वह एकदम कमजोर हो गयी है।

संगमा कडल् कडैन्दान् तण् मुगिल्काळ् वेंगडत्तुच्
सेंकण् माल् सेवडिक् कीळ् अडि वीळ्च्चि विण्णप्पम्
कोंगैमेले कुंगुमत्तिन् कुळम्बु अळियप् पुगुन्दु ओरुनाळ्
तंगुमेल् एन् आवि तंगुम् एन्ड्रु उरैयीर् (583)

कठिन शब्दार्थ - संगम-शंख, कडल-समुद्र, सेंकण-लाल आँखें, सेवडि-लाल चरण, विण्णप्पम-प्रार्थना, तंगु-ठहरना, आवि-प्राण।

भावार्थ - अपने प्रिय से न पाकर गोदा एकदम उदास हो जाती है। यहाँ तक कि प्रिय के बिना उसके प्राण भी निकल जाएँगे। इसलिए वह वेंकटगिरि पर होने वाले काले बादल को दूत बनाकर अपनी दयनीय दशा को प्रिय से सुनाने की प्रार्थना करती है। वह कहती है, ''शंखों से भरे समुद्र को जिसने मंथन किया उस विष्णु के निवास स्थान वेंकटगिरि में रहते ठंडे बादल! तुम लाल आँखों वाले श्री विष्णु के चरणों पर मेरा निवेदन रखना। तुम उनसे मिलकर यह बताना कि मुझे गले लगाकर मेरी छाती पर सज्जित कंकुम को मिटाकर एक दिन ठहरेगा तो मेरे प्राण भी मेरे शरीर में स्थायी रहेंगे।''

मतलब यह है कि गोदा अपने प्रिय को न पाकर अत्यधिक वेदना से दिन बिता रही है। उसकी वेदना दिन ब दिन बढती जाती है। उसकी दशा यहाँ तक पहुँच जाती है कि प्रिय के मिलन के बिना उसके प्राण शरीर से निकल जाएँगे।

कार् कालत्तु ऐळुगिन्ड्र कार् मुगिल्काळ् वेंगडत्तुप्
पोर् कालत्तु ऐळुन्दरुळिप् पोरुदुवनार् पेर् सोल्लि
नीर् कालत्तु एरुक्कि अम् पळ इलै पोल्, वीळ्वेनै
वार् कालत्तु ओरुनाळ् तम् वासगम् तन्दरुळारे (584)

कठिन शब्दार्थ - कार् कालम-वर्षा काल, कार् मुगिल-काले बादल, पोर-युद्ध, पोरुदल-लडना, एरुक्कु-अर्क, वासगम-खुश खबर।

भावार्थ - प्रिय के दर्शन को न पाकर गोदा एकदम उदास और कमजोर हो जाती है। वह हर समय अपने प्रिय के नाम को ही याद करती रहती है। फिर भी उसे प्रिय का दर्शन मिला नहीं। इसलिए वह काले बादल को दूत बनाकर अपने प्रिय के पास भेजती है।

वह इस विश्वास के साथ भेजती है कि काले बादल प्रिय से मिलकर खुश खबर लाएँगे। इसलिए वह कहती है, ''वर्षाकाल में वेंकटगिरि पर उठने वाले काले बादल, रावण के साथ युद्ध करने, युद्ध मैदान में आये श्रीराम का नाम कहकर वर्षा के समय झडकर गिरते अर्क के पत्ते की तरह होने वाली मुझे यह खुश खबर मुझे आकर सुनाना कि आने वाले दिनों में कम से कम एक दिन मुझे जीवित रखने के लिए श्री विष्णु मुझसे मिलने आने वाले हैं।''

मतलब यह है कि गोदा प्रिय के वियोग में कमजोर होती जाती है। यहाँ तक कि उसको प्रिय के आगमन की खबर मात्र जीवित रख सकती हैं।

क्रमशः

(गतांक से)

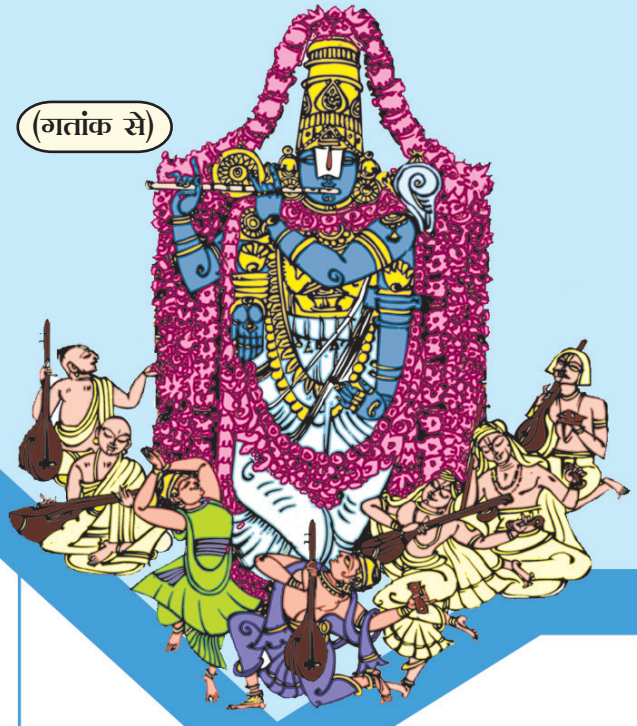

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - 9490924618

''मूज्ञग दोळगिदे सर्वयात्रिगेमिगिलु
सज्ञन नादव ईगिरियल्लि बंदु
हेज्ञय निडलु अवनकुलकोटि उद्दार
आर्जव मार्गदलि संचरिसुवरु
मज्ञनादि कर्म अल्पमाडिदरु नि-
र्ज्वाजवाद पुण्यमेरु तुल्यवागुवुदु।
दुर्जनर उपहति लेशमातुरविल्ल
निर्जररु मेच्चुवरु अवलोकन माडुता
अर्जुन सारथि विजयविठ्ठल वेंकट
बेज्ञरिके बिडिसुवाभिन्न पवकै कोंडु।।''

त्रिभुवन में, यही धाम सर्वश्रेष्ठ है। जो सज्ञन यहाँ दर्शन का कांक्षी बनकर आता है, उसका और उसके पूर्वापर वंशजों का भी उद्धार हो जाता है। पुष्करिणी में स्नानाचरण जैसे अल्पकर्म भी अनंत पुण्य प्राप्ति के कारण बनते हैं।

''कृतयुगदलि इदे वैकुंठवेनिसोदु।
त्रैतायुगदलि अनंतासन।।
अतिशयद्वापरदलि स्वेतद्वीप।
चतुर युगदलि वरगिरिये सिद्ध।।
मतिवंतरु इनितु तिळिदु पूजिपरु।।
भारत खंडदोळु एकभकुति यल्लि।।
क्रतुजपतप तीर्थ यात्रि दानानाना।
व्रत गळु तत्तत्विचारदलि शतकल्पमाडि।।
श्रीकृष्ण गर्पिसिदवगे हितवागदोम्मे शेषाद्रियात्रि।
दुर्मतिगळिगादरु निष्पलवो।।
चतुर मोगनु इदर महिमे येणिसि।
गति तप्पिदंते निल्लुवनु।
क्षितिय मान्नवरिगे साध्यवे एणिसलु।
नुतिसि मातुर पुण्य पडकोंबोदु।।
पतित पावननम्म विजय विठल इल्लि।
सतत नेलिसि इप्प तिरुवेंगळनेनिसि।।''

कृतयुग में यही पर्वत वैकुंठ था, त्रेतायुग में अनंतासन बना हुआ था, द्वापर में श्वेत द्वीप बना, अब कलियुग में 'वरगिरि' बनकर विराजमान है। भारत भूमि में भक्तिपूर्वक अनेक यज्ञ, जप, तप, दान, व्रत, तीर्थाटन एक साथ करके कृष्णार्पणमस्तु कहने पर जो

पुण्यफल प्राप्त होता है, उतना सा फल शेषाद्रि की यात्रा करने से मिल जाता है। धर्म के अनुयायियों के लिए यह संभव है। स्वयं चतुर्मुख ब्रह्म पर्वत को देखकर जड़वत हो जाते हैं। ऐसे पर्वत की महिमा का आकलन करना क्या साधारण मानव के लिए संभव हो पायेगा! लेकिन ऐसा कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। एक बार श्री वेंकटेश्वर की स्तुति करता है, तो सामान्य से अतिसामान्य भक्त को भी वर मिल जाता है उस तिरुवेंकटनाथ की ओर से।

''धरि गिदु वैकुंठपुरविदु निजवेंदु
सुररु किन्नररु सिद्धिरु गरुडरु सा।
द्ध्यरु गंधर्वुरु उरग, यक्षिरु किं-
पुरुषरु चारणरु वरमुनि गळु भू.
सुररु मोदलाद परिपरि ज्ञानिगळु
चरिसुवरु विस्तर वैराग्यदलि।
परम पुरुषतिम्म विजय विट्ठलन्न
स्मरिसि गिरियल्लि परगति बयसुत्त।।''

इसी पर्वत को पृथ्वी पर विराजमान वैकुंठ मानकर, देवता, किन्नर, सिद्ध, गरुड़, साधक, गंधर्व, उरग, यक्ष, किंपुरुष, चारण, श्रेष्ठमुनि, भूसुर आदि ज्ञानी भक्ति एवं विराग के साथ मोक्ष की आकांक्षा से इस तिरुमलेश का स्मरण करते-करते यहीं विचरण कर रहें हैं।

''फलमरगिड बळिळ खगमृगनाना।
कुलदजीविगळेल्ल चरिसुवर मरादि।
कुलदव रेल्ल जनिसि ओंदुरूपिलि।
बलु भकुति यल्लि साधन माडुत्त
सुलभवागिप्परु आवागसुजनक्के
पोळेदु कंगळिगे गोचर वागुत्त
मलरिगे एंदिगू काणि सरु इदर
नेलिय बल्लरु दासरु
बलवंत वेंकट विजयविठ्ठलरेया
सलहुव ईगिरियसारिद जनरिगे।।''

इस पहाड़ पर समस्त देवता वृक्ष, लता, पक्षी, जानवर बनकर स्थित हैं। ये सभी भांति-भांति की योनियाँ धारण कर इस पर्वत पर तीर्थाटन में आये भक्तों को दर्शन देते रहते हैं। इस पर्वत की स्तुति करनेवालों की रक्षा श्री वेंकटेश्वर स्वामी सदा करते रहते हैं।

''अप्रतियात्रेयिदु कंडवरि गागदु
स्वप्रकाश विजयविठ्ठल वेंकट बल्ल''

तिरुमल की यात्रा करना, केवल भक्तों के लिए संभव होता है, सभी के लिए संभव नहीं होता। इस पर्वत की महिमा का परिमाण केवल तिरुमलेश ही जानता है।

''अनंत जन्मद पुण्य फलिसिदरे
अनंतगिरि यात्रे नीव विजयविठल''

अनंतगिरि में आने के लिए अनंत जन्मों के पुण्यसंयोग से ही हो पाता हैं।

श्रीनिवास भगवान को जो सेवायें समर्पित होती हैं, उनमें ''मेट्लपूजा'' (पर्वत की सीढ़ियों की पूजा, जो हल्दी, कुंकुम का लेपन हर सीढ़ी पर होता है, और साथ में हर सीढ़ी पर कर्पूर भी जलाया जाता है) महत्वपूर्ण माना जाता है। यह अनादिकाल की प्रथा है। विजयदास जी ने इस पूजा की प्रक्रिया की समाप्ति में भगवान के दर्शन का जो संप्रदाय होता है, उसका वर्णन भी अपनी एक 'सालुदि' (कीर्तन) में किया है।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

शरण मडैन्द धरुमनुक्का, पण्डु नूत्तुवरै
मरण मडैवित्त मायवन्, तन्नै वणंगवैत्त
करणमिवै युमक्कन्ने न्निरामानुजन् उयिर्हट्कु
अरण ङ्गमैत्तिलनेल्, अरणार् मत्तिव्वारुयिर्क्के ॥६७॥

भगवत्सेवा करने से ही आत्मा का उद्धार होगा, विषयोपभोग करने से अधोगति मिलेगी।

''स्वात्मपादारविन्दप्रपन्नयुधिष्ठिरादिषु परमकृपया पुरा कौरवान् हतवान् परमपुरुषो नारायणः स्वकीयवरिवस्यार्थमेव चेतनानां करणग्राममन्वग्रहीत्, न पुनः स्वरूपविरुद्धकृत्यकरणार्थम्'' इति सम्यगुपदिश्य भगवान् रामानुजो यदि नाकरिष्यदात्मनामुज्जीवनम्, को ह्यन्य एवमुपाकरिष्यत्॥

''अपनी शरण में आये हुए युधिष्ठिर के लिए पूर्वकाल में दुर्योधनादि एक सौ कौरवों का विनाश करानेवाले भगवान ने अपनी सेवा करने के साधनतया ही तुम्हें ये इंद्रिया दी हैं; अतः ये तुम्हारे अपने भोग के लिए नहीं।'' यदि श्री रामानुज स्वामीजी यह उपदेश देते हुए आत्माओं की रक्षा नहीं करते; तो दूसरा कौन इनका रक्षक होता? (कोई नहीं।) (विवरण-श्री रामानुजस्वामीजी ने सबको यह उपदेश दिया की यह अत्यद्भुत मानव शरीर भगवान की सेवा करने के लिए ही मिला है, न तु भोग भोगने के लिए। भगवत्सेवा करने से ही आत्मा का उद्धार होगा; विषयोपभोग करने से अधोगति मिलेगी। ''विचित्रा देहसंपत्तिरीश्वराय निवेदितुम्...कृता'' इत्यादि इस विषय में प्रमाण है। श्री कुलशेखरसूरी ने भी गाया, ''जिह्वे कीर्तय केशवम्'', इत्यादि। श्री रामानुजस्वामीजी को छोड, दूसरा कौन ऐसा सुंदर उपदेश देकर जनता का आत्मोद्धार कर सकेगा?

यह अत्यद्भुत मानव शरीर भगवान कि सेवा करने के लिये ही मिला हैं,
न तु भोग भोगने के लिये।

क्रमशः

ओंटिमिट्टा

श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 अप्रैल 10 से 18 तक

10-04-2022
रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - शेषवाहन

11-04-2022
सोमवार
दिन - वेणुगानालंकार
रात - हंसवाहन

12-04-2022
मंगलवार
दिन -
वटपत्रशायी अलंकार
रात - सिंहवाहन

13-04-2022
बुधवार
दिन -
नवनीतकृष्णालंकार
रात - हनुमत्सेवा

14-04-2022
गुरुवार
दिन - मोहिनीसेवा
रात - गरुडसेवा

15-04-2022
शुक्रवार
दिन - शिवधनुर्भाणालंकार
रात - एदुर्कोलु,
कल्याणोत्सव, गजवाहन

16-04-2022
शनिवार
दिन - रथ-यात्रा

17-04-2022
रविवार
दिन -
कालीयमर्दनालंकार
रात - अश्ववाहन

18-04-2022
सोमवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

आयुर्वेद

गुड और हमारा आरोग्य

- डॉ.सुमा जोषी, मोबाइल -9449515046.

गुड क्या है?

ईख या गन्ने के रस को जब पकाते-पकाते तब वह बहुत गाढ़ा हो जाता है तो उसे 'गुड' कहा जाता है। गुड में कई प्रकार के प्राकृतिक मिनरल्स मिलते हैं। इसके अलावा गुड में किसी प्रकार का कोई रासायनिक पदार्थ नहीं मिला होता है। इसे सीधे गन्ने के रस से बनाया जाता है। यही कारण है कि गुड कई प्रकार के पोषक तत्वों से भरा होता है, जो कि हमें सफेद शक्कर में नहीं मिलते हैं। गुड को ईख के अलावा ताड, खजूर आदि से भी बनाया जाता है। 'गुड' वात, पित्त और कफ तीनों दोषों को शान्त करता है और इसीलिए गुड को आयुर्वेद में एक फायदेमन्द औषधि माना गया है।

पुराना और नया गुड

आयुर्वेदिक के अनुसार पुराना गुड, नए गुड से अधिक फायदेमन्द होता है। क्योंकि पुराना गुड हमारे हृदय के लिए काफी अच्छा माना जाता है और भोजन के साथ गुड खाने से पचाने में मदद मिलती है। गुड, मिठास के अलावा अपने उत्तम गुणों के लिए जाना जाता है। वे लोग, जो मधुमेह यानि कि डायबिटीस के शिकायद हैं, उनके लिए गुड का प्रयोग भी शक्कर की तरह हानिकारक हो सकता है।

स्वास्थ्य के लिए गुड का उपयोग

गुड और घी को 'सूपरफुड' कहा जाता है। खाने के बाद गुड और घी को खाने से इम्युनिटी बढती है। गुड होर्मोन से सम्बन्धित समस्याओं को भी नियन्त्रित करने में सहायक है। बढ़ते वजन को कम करने के लिए रोज गुड और निम्बू पानी का सेवन करना चाहिए। इसका सेवन करने से बॉडी फैट कम होता है और वजन बढ़ने की समस्या दूर होती है। पाचन - सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए भोजन के बाद गुड का सेवन करना चाहिए।

गुड की चाय

एक पैन में पानी डालें और उसमें गुड डाल दें। साथ ही इसमें काली मिर्च, लौंग, इलायची, और अदरक और तुलसी का पत्ता डाल कर खूब उबाल लें। जब इसमें से खुशबू आने लगती है तो थोडी सी चायपत्ती डाल कर छान लें। कोशिश करें की इसे बिना दूध के पीए और यदि दूध डालना है तो दूध ऊपर से गर्म कर इसमें मिला लें। यह चाय एनिमिया में फायदेमन्द है। सर्दि-जुकाम, कफ में और शरीर को डिटॉक्स करने में कारगर है। यह थकान और कमजोरी को दूर करता है। गुड की चाय वैसे तो हर मौसम में पी जा सकती है, लेकिन गर्मियों में इसे कम पीना चाहिए।

भुना हुआ चना और गुड हमारे शरीर के प्रोटीन-बैलेंस को ठीक रखने के लिए काफी फायदेमन्द साबित हो सकता है। अगर मुँह खराब है तो गुड और चना खाने से मुँह ठीक हो जाता है। ये आयरन और प्रोटीन का बहुत अच्छा सोर्स है और ये उन लोगों के लिए भी अच्छा है जिनका हेमोग्लोबिन कम हो। पीरियड्स में यह महिलाओं की मदद कर सकता है और ब्लड लॉस से होनेवाली कमजोरी को दूर कर सकता है। यह इम्युनिटि को बढ़ाता है। हृदय के लिए अच्छा है। पोटैशियम और फॉसफोरस के कारण दान्तों के लिए भी अच्छा है। अगर प्लीहोदर है तो (Splenomegaly) - हरीत की चूर्ण (3 से 5 ग्राम) + गुड (2 से 3 ग्राम) दिन में दो बार लेना चाहिए। गुड को आयुर्वेदिक औषधियों को तैयार करने में प्रयोग में लाया जाता है। बाहर से घर आते ही, विशेषतः दोपहर के समय में, गुड को खाकर उसके बाद पानी पीना चाहिए। गुड शर्करा यह गुड के कणिकाओं को कहा जाता है। इन गुड की कणिकाओं को घायल हुए व्यक्तियों के इलाज में प्रयोग में लाया जाता है।

हरीतकी फल का पेस्ट + गुड खाने से बवासीर में लाभदायक होता है। हर दिन थोडा गुड खाने से होर्मोन का संतुलन कर सकते हैं और महिलाओं के लिए मासिक धर्म सही होता है।

पेट के कीडों के लिए

आधी चम्मच अजवायन को एक चम्मच गुड में मिलाकर दिन में दो बार सेवन करें। अजवायन की तीखी प्रकृति और गुड में डिटॉक्सिफाइंग गुण अंतों के मार्ग को साफ रखते हुए इन कीडों को शरीर से बाहर निकाल देते हैं। बेहतर परिणाम के लिए इसे खाली पेट या लञ्च या डिनर से एक घण्ठा पहले खाना चाहिए।

फाइन लाइन्स और झुर्रियों से बचने के लिए 30 साल से बडी महिलाओं को हफ्ते में कम से कम तीन बार गुड खाना चाहिए। यह अजीब लग सकता है, लेकिन उस खूबसूरत रंग को प्राप्त करने के लिए गुड का फैस पैक एक सदियों पुराना सौंदर्य उपाय है। आधा चम्मच गुड का पाउडर, शहद और निम्बु के साथ मिलाकर चेहरे पर एक पतली परत के रूप में लगाएँ। पंद्रह मिनट बाद इसे धोकर सुखा लें। यह फेस पैक न केवल त्वचा को कसता है, बल्कि गुड और शहद में मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण त्वचा की कोशिकाओं की मरम्मत करते हैं, जबकि नीम्बू त्वचा के छिद्रों में जमा गन्दगी और जमी हुई मैल को साफ करता है। गुड के 2-3 इंच के टुकडे को भोजन के बाद सेवन करने से पाचन में सुधार होता है। जिनमें खून की कमी की समस्या है, वे प्रतिदिन 10-15 ग्राम तक गुड का प्रयोग करें।

सावधानियाँ व दुष्प्रभाव

लम्बे समय तक उपयोग, वह भी उच्च खुराक में वजन बढने का कारण हो सकता है। मधुमेह में प्रयोग सावधानी से करें। लम्बे समय तक लगातार उपयोग किये जाने वाले गुड से आंतों में कृमि का संक्रमण हो सकता है। आयुर्वेद में मछली के साथ मूली और गुड का सेवन वर्जित है। चरक संहिता के अनुसार सूजन और सूजन संबंधी विकारों में गुड और उसके उत्पादकों का सेवन वर्जित है।

गुड शीतलक होने से ठण्ड या ठण्ड के मौसम में सेवन नहीं करना चाहिए। ऐसे करने से श्वसन संबंधी लक्षण खराब हो सकते हैं। इसी कराण से बुखार, सर्दी और खांसी होने पर गुड से परहेज करना सबसे अच्छा है। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से गर्भावस्था में गुड के प्रयोग के संबंध में पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान गुड लेने से पहले चिकित्सक से परामर्श करना उचित है। यहाँ पर दी गयी बातें सिर्फ जानकारी के लिए हैं। संदेह निवृत्ति के लिए वैद्य से परामर्श करना ही उचित है।

अप्रैल महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

मेषराशि - शरीर स्वस्थ रहेगा, मन प्रसन्न, सुख-सौहार्द्र प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख-सहयोग, विघ्न बाधाओं का निवारण। विद्या-बुद्धि का विकास, नौकरी में सफलता उच्चपद प्राप्ति योग। भूमि-वाहन सुख। सामाजिक कार्यों में प्रगति।

वृषभराशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, पारिवारिक सुख-सौहार्द, कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण। सन्तान सुख, दाम्पत्य सुख, नौकरी में पदोन्नती, नवीन उच्चपद प्राप्ति। शैक्षणिक सकलता, धर्मकार्यों में समय व्यतीत, धन लाभ।

मिथुनराशि - मिलाजुला असर दिखेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। सामाजिक कार्यों में सफलता। वाद-विवाद में न पड़े झेलना पड़ सकता है, अपने वाणी-व्यवहार की कुशलता ही समस्याओं का समाधान में सहायक।

कर्कराशि - अपने निकटस्वजनों का सहयोग। अन्न-धन-नूतन-वस्त्र-आभूषणों का लाभ। शैक्षणिक कार्यों में प्रगति। स्वास्थ्य चिन्ता, मानसिक तनाव। दुर्घटना से बचें। अपने आपको संयम में रखे।

सिंहराशि - स्वास्थ्य सुख सामान्य रहेगा। अनावश्यक तनाव, विवाद से कष्ट, सन्तान सुख, शैक्षणिक सफलता। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगा। देखकर लेनदेन करें, धन-हानि योग है। गृहस्थ जीवन सुखी, विशिष्ट लोगों का सम्पर्क लाभदायक रहेगा।

कन्याराशि - स्वास्थ्य बाधा। उद्योग, व्यापार कार्यों में अनुकूलता, शैक्षणिक विकास, राजकीय सहयोग। निरर्थक भागदौड़ से परेशानी, छात्रों के लिए समय अनुकूल। दाम्पत्य सुख, धर्मकार्यों में रुचि।

तुलाराशि - आरोग्य सुख, धन-धान्य-सौख्य वस्त्रादिकी प्राप्ति। कार्य क्षेत्रों में उत्तरोतर प्रगति। नौकरी में पदोन्नति, दाम्पत्य सुख, सौहार्द्र की वृद्धि। गृह-भूमि-कृषि कार्यों में प्रगति। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में सफलता मान-सम्मान-यश कीर्ति।

वृश्चिकराशि - शारीरिक सुख-सम्मान लाभ, अपने सठो सम्बन्धियों-मित्र-पुत्रादि सुख सहयोग प्राप्त। वस्त्र-द्रव्यादि लाभ, प्रतियोगिता परिक्षाओं में सफलता। रुके कार्यों में प्रगति। नौकरी पेशा में परिवर्तना।

धनुराशि - शारीरिक सुख मध्यम रहेगा, मित्रों के सहयोग से कार्य सिद्धि। विद्या-बुद्धि का विकास, व्यवसायिक कार्यों में श्रम पूर्ण सफलता। सन्तान सुख। आर्थिक समुन्नति। पारिवारिक सुख, नवीन उच्चपद प्राप्ति।

मकरराशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। प्रशासनिक कार्यों में पदोन्नति। प्रतिस्पर्धाओं में आकर्षण बढ़ेगा। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगा। उद्योग-व्यापार में अनुकूलता। साहसिक कामों में सफलता। धनार्जन का मार्ग प्रशस्त होगा। वृद्धजनों को कष्ट। अपने माता-पिता के ऊपर ध्यान रखे और सेवा करते रहे।

कुम्भराशि - मासफल सामान्य रहेगा। कार्य क्षेत्र में मिलजुला सहयोग रहेगा। आर्थिक मन्दी, अनावश्यक यात्रा कि स्थिति बनी रहेगी। रुके काम पूरे होंगे। अपने स्वजन-मित्रों के सहयोग से कार्य सिद्धि। धार्मिक कार्यों में रुचि। वाहन सुख, दाम्पत्य सुख।

मीनराशि - शारीरिक सुख मध्यम रहेगा। धन व्यय होंगे जिससे मानसिक चिंता-अशांति बढ़ेगी। यात्रा-तीर्थाटन में रुचि। अपनों का सहयोग। राजनीतिक क्षेत्रों से लाभ। व्यावसायिक कार्यों में सफलता, विद्या-बुद्धि का विकास। आर्थिक स्थिति सुदृढ होंगे।

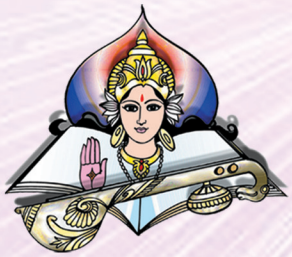

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

षोडशः पाठः - सोलहवाँ पाठ

कलशः = कप (प्यांला)	अलम्= पर्याप्त	मञ्चः= काट
सम्यक् = उचित	जलम्= पानी	झटिति= तुरंत (जल्दी)
कुर्यात् = वह करना चाहिए	कुर्याः = तुम बनाओं	कुर्याम् = मैं बनाती हूँ

प्रश्न : (अ)

1. बालकाः मञ्चे आसन्।
2. कलशे जलम् अस्ति वा?
3. जलं सम्यक् नास्ति।
4. एषः अस्मद् मञ्चः।
5. युष्मत्कलशाः कुत्र सन्ति?
6. यूयं पाकं झटिति कुरुत।
7. अद्य पाकं कः कुर्यात्?
8. त्वं शाकं कुर्याः, अहं पाकं कुर्याम्।
9. त्वम् एकः एव शाकं कुर्याः किम्?
10. अहम् एकोऽपि पाकं शाकमपि सम्यगेव कुर्याम्।

जवाब : (अ)

1. लड़के काट पर हैं।
2. क्या प्याले में पानी है?
3. पानी अच्छा नहीं है।
4. यह हमारा काट है।
5. तुम्हारे कटोरे कहाँ हैं?
6. आप जल्दी पकावो।
7. आज खाना कौन पकाता है?
8. तुम कडी बनाओं, मैं खाना बनाती हूँ।
9. आप अकेले सब्जी बनाओगे क्या?
10. मैं अकेले ही अच्छी तरह से सब्जी और खाना पकाती हूँ।

प्रश्न : (आ)

1. आप जल्दी से स्नान कीजिए।
2. आप सरोवर में न नहाएँ।
3. मेरे घर में पानी है, वहाँ नहाएँ।
4. आपका घर कहाँ है?
5. हमारे घर वहाँ हैं।
6. आप जल्दी खाना खाइएँ।
7. मैं अभी न करूंगी।
8. बाद में करेंगे।
9. वहाँ कितने बच्चों ने भोजन किया?
10. वहाँ एक भी भोजन नहीं किया।

जवाब : (आ)

1. अलम्, यूयं झटिति स्नानं कुरुत।
2. यूयं तटाके स्नानं न कुरुत।
3. अस्मद्गृहे जलमस्ति; तत्र स्नानं कुरुत।
4. युष्मद्गृहं कुत्रास्ति?
5. अस्मद्गृहाणि तत्र सन्ति।
6. त्वं झटिति भोजनं कुर्याः।
7. अहं इदानीं न कुर्याम्।
8. अनन्तरं कुर्याम्।
9. तत्र कति बालकाः भोजनम् अकुर्वन्?
10. तत्र एकोपि भोजनं न अकरोत्।

नीतिकथा

कर्म का फल

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था। अब राज्य का शासन पांडवों के अधीन आ गया था। युधिष्टर का राज्याभिषेक धूम-धाम से हो रहा था। उस उत्सव में दृतराष्ट्र भी शामिल था।

भगवान कृष्ण उसके पासे बैठे थे। तब दृतराष्ट्र ने कृष्ण से पूछा, ''हे माधव! अंधा होते हुए भी मैंने विदुर के मार्गदर्शन पर न्याय और धर्म का शासन किया था। फिर भी अब मेरे सौ पुत्रों में एक भी जीवित नहीं है। इसका क्या कारण है?''

भगवान कृष्ण ने उसका सवाल सुनकर मृदु मुस्कान प्रकट की। फिर जवाब दिया, ''हे दृतराष्ट्र! अब मैं तुमको एक कहानी सुनाता हूँ। अंत में मेरा प्रश्न का जवाब दो, फिर मैं तुम्हारे संदेह को दूर करता हूँ।''

इतना कहकर भगवान कृष्ण कहानी सुनाने लगे। उन्होंने कहा, ''एक राज्य में राजा धर्म और न्याय के पथ पर शासन कर रहा था। एक बार काम माँगते हुए एक गरीब रसोइया उसके पास आया था। राजा ने उसे पाकशाला में खाना बनाने का काम दिया।

उसने राजा को रोज रोचक ढंग से खाना पकाकर दिया। उससे बनाये गये खाने को खाकर राजा ने उसकी बडी प्रशंसा की। तब उस रसोइया के मन में यह इच्छा जाग उठी कि और अधिक रोचक ढंग से खाना पकाने पर राजा पुरस्कार देंगे।

इस विचार से रसोइया पास के तालाब से हंस के कुछ बच्चों को पकड लाया और उससे स्वादिष्ट खाना बनाकर राजा को परोसने लगा। राजा को पता नहीं था कि वह मांसाहार खा रहा है। इसलिए उसने खाना खाकर उसकी बडी प्रशंशा की और उसे पुरस्कार भी दिया। उन्होंने यह आज्ञा भी दी कि रोज इसी प्रकार से खाना पकाओ। इससे खुश होकर उसने रोज हंस के बच्चों को पकड लाता और स्वाद भरा खाना बनाकर राजा को परोसता रहा। राजा भी बडे चाव से उससे परोसे गये भोजन को खाता रहा।

इस कहानी को सुनाकर भगवान कृष्ण ने दृतराष्ट्र को देखकर पूछा, ''हे दृतराष्ट्र! अब बताओं कि इसमें राजा या रसोइया किसका अपराध है?''

यह सुनकर दृतराष्ट्र ने उत्तर दिया, ''इसमें संदेह नहीं है कि अपराधी राजा मात्र है। क्योंकि गरीब रसोइया में राजा से पुरस्कार पाने की लालच का होना स्वाभाविक है। इसलिए

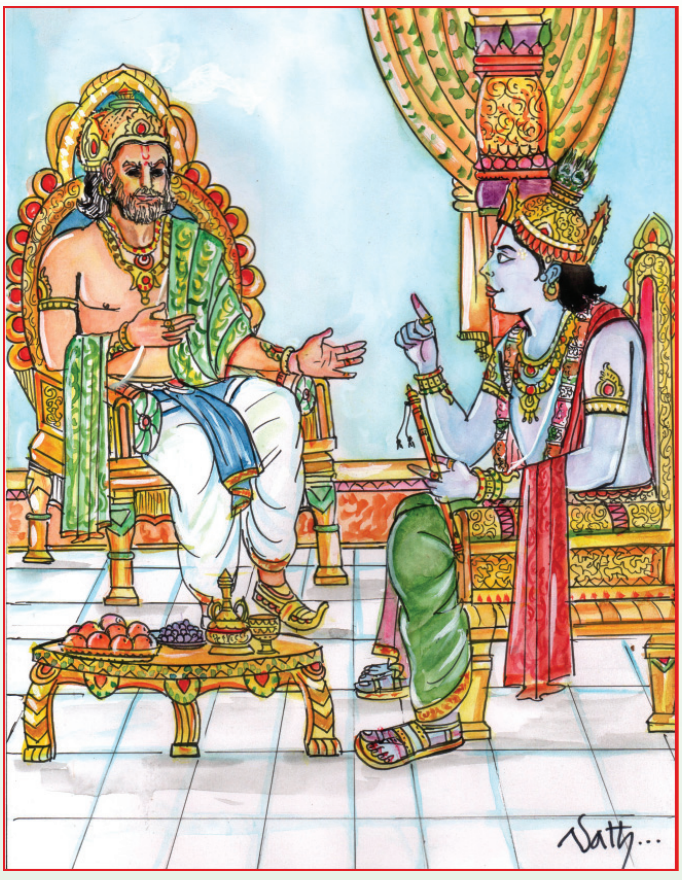

उसका अपराध तो बडा नहीं है। पर कई दिन तक मांसाहार को खाने के बाद भी उसे न समझने और पहचानने वाला राजा ही बडा अपराधी है।''

दृतराष्ट्र ने आगे कहा, ''एकबार ऋषि वशिष्ट को रसोइया ने अज्ञान से मांसाहार परोस दिया था। पर उन्होंने उसे पहचान लिया और तुरंत उसको शाप दे दिया था। ऐसा ज्ञान और चेतना राजा में नहीं थे। इसलिए वही बडा अपराधी है।'' उसका जवाब सुनकर भगवान कृष्ण ने कहा, ''हे दृतराष्ट्र! न्याय परायण राजा होने के नाते तुमने ठीक कहा कि इसमें राजा का अपराध बडा है।

तुम्हारी न्यायप्रियता ने ही तुमको भीष्म, द्रोण, विदुर की राज्यसभा में तुमको शासक के रूप में सिंहासन पर बिठाया था। तुमको उत्तम पत्नी और उत्तम पुत्रों को भी दिया था।''

भगवान कृष्ण ने आगे कहा, ''लेकिन जिस कहानी को मैंने सुनाया था, वह तुम्हारे पूर्व जन्म की बता है। पूर्व जन्म में तुम्हारी गलती के कारण तुमने हंस के सौ बच्चों को पकाकर खा लिया था। बच्चों की हत्या पर उनकी माँ को कितना दुःख हुआ होगा। यह वेदना तुमको अब इस महाभारत युद्ध में अनुभव हुआ होगा। तुम्हारे कथन के अनुसार एक बार देखते ही वशिष्ट ने मांसाहार को पहचान लिया था। पर तुमने मांसाहार और शाकाहार के भेद को नहीं समझा। इसलिए आँखें होते हुए भी तुमने ऐसी गलती की थी। इस कर्म के कारण इस जन्म में तुम अंधे भी हो गये थे। हर एक को उनके कर्म का फल जरूर मिलता है।''

भगवान का जवाब पाकर दृतराष्ट्र ने समझ लिया कि सब अपने कर्मों का फल है कोई उससे बच नहीं सकता फिर वह चुप हो गया था।

'क्विज'

- एन.प्रत्यूषा

१) 'उगादि पच्चडी' (तेलुगु प्रांत का नूतन वर्ष) कितने रुचियों का सम्मेलन है?

अ) सात आ) चार इ) छः ई) आठ

२) श्री सीताराम का कल्याणोत्सव आन्ध्रा में किस प्रांत में किया जाता है?

अ) भद्रादी आ) यदाद्री इ) तिरुपति ई) ओंटिमिट्टा

३) अभिमन्यु के पुत्र का क्या नाम था?

अ) परीक्षित आ) सोमकेश इ) पुरुषोत्तम ई) प्रह्लाद

४) तिरुपति स्थित सप्त गोप्रदक्षण शाला के तुलाभार में किस को तोला जाता है?

अ) गाय आ) बैल इ) भैंस ई) साँड

५) श्री पट्टाभिरामस्वामी जी का मंदिर इन में कौन से जगह पर स्थित है?

अ) ओंटिमिट्टा आ) भद्राचलम् इ) तिरुपति ई) वायल्पाडु

६) मेघनाथ का दूसरा नाम क्या था?

अ) जितेन्द्र आ) इंद्रजीत इ) अभिजित ई) अमरनाथ

७) श्रीराम को वनवास भेजने की प्रेरणा कैकेयी को किसने दी थी?

अ) मंथरा आ) मंदोदरी इ) सुमित्रा ई) त्रिजटा

जवाब

१) इ २) ई ३) अ ४) अ ५) ई ६) आ ७) अ

चित्रकथा

श्रीरामरक्षा! सर्वजगद्रक्षा!!

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन्
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

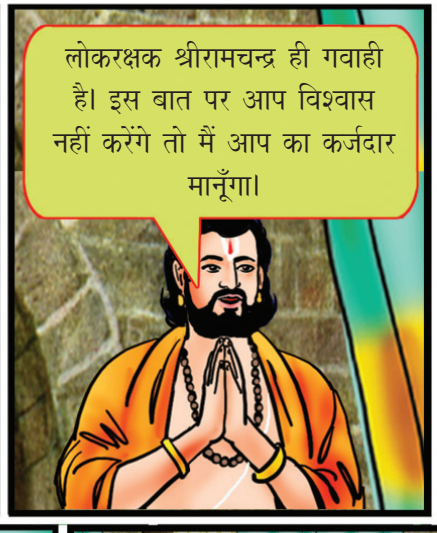

आप को इतना बडा साम्राज्य देनेवाला मेरा राम, यह छोटी रकम दे नहीं सकेगा क्या महाराज?

खामोश... यह घमंड की बात है। इससे पैसे वसूल होने तक कैद कर दो।

रामदास को कैदी बनाया गया। वहाँ के अधिकार गण रामदास को तरह-तरह से पीडित करने लगे। रामदास से पत्थर ढुलवा रहे थे। राम के ध्यान में मग्न रामदास इन सभी यातनाओं को बहुत ही धैर्य से सहन कर रहा था।

सीता माँ केलिए सोने का हार तैयार किया है। उनके लिए १० हजार हुए रामचंद्रा!

रामदास के आर्तनादों को सुनकर रामचन्द्र का हृदय पिघल गया। रामचन्द्रजी तानीषा के पास गये।

तानीषा प्रभू! मैं रामोजी, मेरा भाई लक्ष्मोजी, हम दोनों रामदास के सेवक हैं। रामदास, सरकार का जितना कर्ज है उतना पैसे लेकर हमें रसीद दो। प्रातःकाल होते ही रामदास को कैद से मुक्त कर दीजिए।

तानीषा तटाक से उठकर अंतःपुर सब छान मारा। बंद दरवाजा बंद ही है। उनके सामने उपस्थित सिक्कों का गठरी से पता चलता है कि उन्होंने स्वपन नहीं देखा। उनके पास आये हुए दो व्यक्ति राम, लक्ष्मण ही है। इस बात को जान कर तुरंत जेलखाने की ओर निकल पडे।

रामदास को छोड दो।

रामदास जी! मुझे माफ कीजिए। राजा होने के घमंड से तुम्हारे भक्ति के महत्व को न जान कर तुम्हें दंडित किया। भद्राचल पर आज से सर्वाधिकार तुम्हें सौंप कर मैं अपनी गलती का प्रायश्चित करूँगा।

2

राम-लक्ष्मण तानीषा को स्वप्न में दिख कर, रामदास का कर्ज चुकाया और उन्हें ऋण मुक्त करने की खबर सुन कर जनता ने जय-जय ध्वनी की।

भक्त रामदास की जय!

स्वस्ति।

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

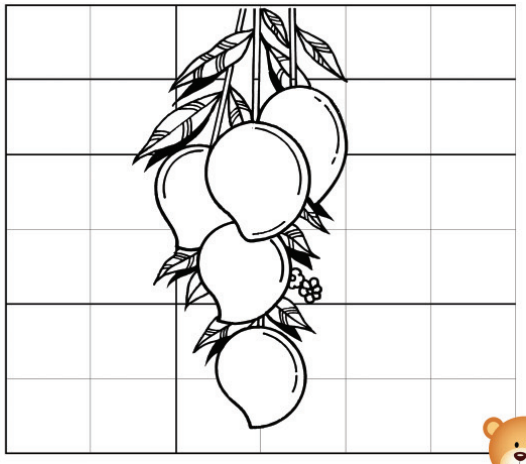

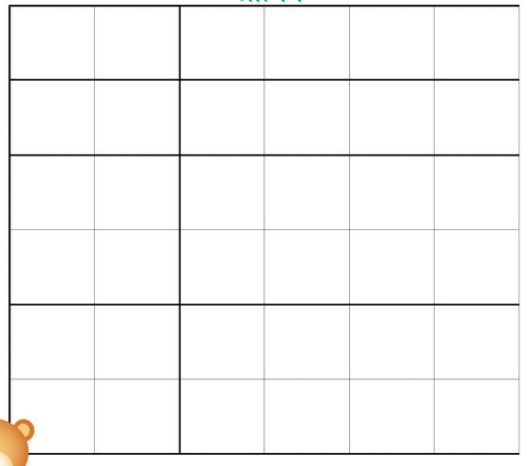

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीनिवासमंगापुरम्	अ) श्री कोदंडरामस्वामी
2) तिरुपति	आ) श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी
3) कार्वेटिनगरम्	इ) श्री पट्टाभिरामस्वामी
4) नागुलापुरम्	ई) श्री वेणुगोपालस्वामी
5) वायल्पाडु	उ) श्री वेदनारायणस्वामी

1) आ 2) अ 3) ई 4) उ 5) इ

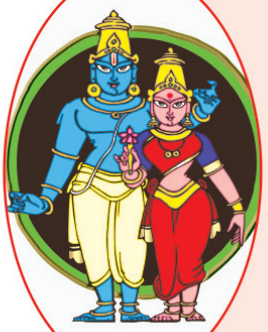

श्रीराम गायत्री मंत्र

ॐ दाशरथाये विद्हमे

सीता वल्लभाय धीमहि,

तन्नो रामः

प्रचोदयात्।

चित्र में अंतर खोजे!

1) कंधे पर धारण बाणों में एक बाण नहीं है।
2) कान की बाली
3) सिर में फूल
4) टूटा हुआ तीर
5) चैन डॉलर
6) मुकुट के ऊपर का कोण
7) हाथ का कंगन

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 08-02-2022, तिरुमल में रथसप्तमी के अवसर पर श्री मलयप्पस्वामीजी के विविध वाहनों पर आरूढ़ हुए दृश्य।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-03-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

शांत्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै
कांत्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै।
क्षांत्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै
धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै।।